अकादमिक शोध के लिए उच्च स्तर समीक्षित जर्नल

E-ISSN: 3107-3840 (Online)

संस्करण: 1 अंक: 4
जुलाई-अगस्त 2025

# ग्रामीण भारत संवाद

## ग्रामीण आयामों की मासिक बहुविषयक शोध पत्रिका

प्रकाशक
मातृभूमि पब्लिकेशन हाउस
डी-18, रजत विहार, दानिश नगर रोड, होशंगाबाद रोड, भोपाल 462026
वेबसाइट: www.grameenbharatsamvad.in
ईमेल: publicationmatrubhumi@gmail.com संपर्क सूत्र: 8817914858

सहयोग
इंटरनेशनल रूरल डेवलपमेंट एंड रिसर्च एसोसिएशन
इंटेग्राक्वेस्ट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एलएलपी
संवाहक फाउंडेशन

| क्रमांक | लेख का शीर्षक | लेखक | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|---|
| 1. | हिसार जिले में महिला स्व-सहायता समूहों का संस्थागत विस्तार :DAY-NRLM और HSRLM आँकड़ों पर आधारित विश्लेषण (2014-2023) | अनु मलिक<br>सिंघानिया विश्वविद्यालय | 1-15 |
| 2. | महिलाओं के स्व-सहायता समूहों का सामाजिक सशक्तिकरण पर ऐतिहासिक प्रभाव :निर्णय-निर्माण और सार्वजनिक भागीदारी का विश्लेषण, हिसार जिला, हरियाणा( 2001-2022) | वीरेंदर श्योरान<br>सिंघानिया विश्वविद्यालय | 16-30 |
| 3. | वैदिक जल प्रबंधन दर्शन और जल जीवन मिशनआधुनिक विकास में प्राचीन : सिद्धांतों की प्रासंगिकता | डॉ. दिग्विजय सिंह राजपूत आईसीएसएसआर पोस्ट डॉक्टोरल फेलोदिल्ली ,इग्नू , डॉमीणा सिंह राजेंद्र . विभागाध्यक्ष प्रशासन लोक , दिल्ली ,इग्नू ,विभाग | 31-42 |
| 4. | वसुधैव कुटुम्बकम्अद्वैत एकात्मता की : व्यावहारिक दृष्टि | शैलेंद्र मिश्र ,मनीष मिश्रा ,सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय | 43-50 |

Origional Research Article

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

# हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों का संस्थागत विस्तार: DAY-NRLM और HSRLM आँकड़ों पर आधारित विश्लेषण (2014-2023)

अनु मलिक
सिंघानिया विश्वविद्यालय

## 1.1 सारांश

हरियाणा के हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की प्रगति का विश्लेषण करने वाला यह शोध-पत्र दीनदयाल अंत्योदय योजना और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के आधिकारिक ढाँचे और मिशन-उद्देश्यों पर केंद्रित है। इन मिशनों का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण गरीब परिवारों को संगठित करना और उन्हें आजीविका, आत्म-रोज़गार और सेवा-समर्थन से जोड़ना है।

हिसार जिले में 2014 से 2023 के बीच महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस अवधि में समूहों की संख्या 620 से बढ़कर 1,650 हो गई, जबकि सदस्यता 6,820 से बढ़कर 18,150 तक पहुँच गई। यह वृद्धि न केवल संख्या में है, बल्कि समूहों की आर्थिक गतिविधियों में भी देखी जा सकती है। रिवॉल्विंग फंड, कम्युनिटी इन्वेस्टमेंट फंड और बैंक लिंकेज में भी वृद्धि हुई है, जो यह दर्शाती है कि महिला स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के लिए औपचारिक वित्तीय व्यवस्था और स्थानीय उद्यमिता के प्रवेश-द्वार के रूप में विकसित हुए हैं।

यह अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों ने संस्थागत सुदृढ़ीकरण, आर्थिक सक्रियता, सामूहिक नेतृत्व और ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, अभी भी कई चुनौतियाँ हैं जिन्हें पार करना होगा। शेष समूहों तक पूर्ण वित्तीय सहायता, कौशल प्रशिक्षण, बाज़ार-संपर्क और डिजिटल साक्षरता का विस्तार आवश्यक है ताकि यह प्रगति अधिक समावेशी और टिकाऊ बन सके।

मुख्य शब्द: महिला स्वयं सहायता समूह, हिसार जिला, दीनदयाल अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, हरियाणा स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन, संस्थागत विस्तार, ग्रामीण आजीविका, वित्तीय समावेशन, महिला सशक्तिकरण

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

## 1.2 प्रस्तावना

भारत जैसे बड़े और विविध देश में ग्रामीण विकास केवल सड़कें और पुल बनाना या कृषि उत्पादन बढ़ाना नहीं है। यह स्थानीय समूहों, समुदाय आधारित संगठनों, सामाजिक संबंधों और महिलाओं की भागीदारी से भी जुड़ा है। स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण गरीब परिवारों, खासकर महिलाओं को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद की है।

महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए, उन्हें एकजुट करना और उनमें आत्मनिर्भरता की भावना जगाना आवश्यक है।एनआरएलएम का मिशन स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह योजना गरीब ग्रामीण परिवारों को मजबूत स्थानीय संस्थानों के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान करती है और उन्हें कौशल प्रशिक्षण देती है।

हरियाणा में एचएसआरएलएम मिशन 2013 से चल रहा है और राज्य में स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों और क्लस्टर-स्तरीय संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देता है। एचएसआरएलएम के सार्वजनिक डैशबोर्ड पर स्वयं सहायता समूहों की संख्या,परिवारों को कवरेज, रिवॉल्विंग फंड, सामुदायिक निवेश कोष और बैंक लिंकेज जैसे संकेतक दिखाए जाते हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि मिशन का फोकस केवल समूह निर्माण पर नहीं है, बल्कि वित्तीय और संस्थागत स्थिरता पर भी है।

हिसार जिला इस अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है क्योंकि यह हरियाणा के पश्चिमी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित जिला है। जिला सरकार की वेबसाइट के अनुसार इसकी जनसंख्या 17,43,931 है, जिसमें 9 खंड शामिल हैं: हिसार प्रथम, हिसार द्वितीय, हांसी प्रथम, हांसी द्वितीय, आदमपुर, अग्रोहा, बरवाला, नारनौद और उकलाना। यह भौगोलिक संरचना स्वयं सहायता समूहों के वितरण के विश्लेषण के लिए एक उपयुक्त इकाई प्रदान करती है।

## 1.3 अध्ययन का औचित्य

स्वयं सहायता समूहों का महत्व ऋण लेने से कहीं ज्यादा है। वे ग्रामीण महिलाओं को सामूहिक निर्णय लेने, बचत करने, छोटे व्यवसाय चलाने, सामाजिक सहयोग करने और स्थानीय नेतृत्व के लिए तैयार करते हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान और ग्रामीण विकास मंत्रालय से जुड़े संसाधन बताते हैं कि दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का ढाँचा स्वयं सहायता समूहों को केवल कल्याणकारी समूह नहीं, बल्कि संस्थागत रूप से सक्षम आर्थिक इकाई के रूप में देखता है। इसके तहत घूमने वाला कोष और समुदाय निवेश कोष जैसी सहायता स्वयं सहायता समूहों की वित्तीय क्षमता बढ़ाने के लिए दी जाती है, ताकि वे बैंक ऋण और आजीविका गतिविधियों के लिए बेहतर स्थिति में आ सकें।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

हिसार जिले में स्वयं सहायता समूहों का विकास देखने के लिए यह अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ पर स्वयं सहायता समूहों के विस्तार के बारे में वर्षवार, ब्लॉकवार और वित्तीय सहायता-आधारित विश्लेषण की जरूरत लंबे समय से थी। आपके दिए गए आंकड़ों में 2014-2023 की अवधि के लिए स्वयं सहायता समूह संख्या, सदस्यता, घूमने वाला कोष, समुदाय निवेश कोष और बैंक-लिंकेज के संकलित आंकड़े हैं, जो इस अध्ययन की आधारशिला बनते हैं।

## 1.4 शोध समस्या

इस अध्ययन का मुख्य मुद्दा यह है कि हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूह कितनी तेजी से बढ़े। हम यह भी जानना चाहते हैं कि वे किन क्षेत्रों में सबसे ज्यादा मजबूत हुए और बैंक से जुड़ने और समुदाय द्वारा निवेशित धन ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति को कितना प्रभावित किया। इसके अलावा, यह भी देखा गया कि क्या यह वृद्धि सिर्फ संख्या बढ़ाने तक सीमित रही या इसने ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय रूप से शामिल होने की क्षमता भी दी।

## 1.5 शोध उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य 2014 और 2023 के बीच हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की प्रगति को देखना है। हम यह जानना चाहते हैं कि इन समूहों में कितनी महिलाएं शामिल हैं, उन्हें कितनी वित्तीय मदद मिल रही है, और वे बैंकों से कैसे जुड़ रहे हैं।

हम कुछ और बातें भी समझना चाहते हैं:

- महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या हर साल कैसे बढ़ रही है
- इन समूहों का ब्लॉक स्तर पर वितरण कैसा है
- वित्तीय सहायता, जैसे कि आरएफ और सीआईएफ, कैसे बढ़ रही है
- बैंकों से मिलने वाले ऋण में क्या बदलाव आया है
- इन समूहों ने महिलाओं को सशक्त बनाने में कैसे मदद की है

## 1.6 अध्ययन क्षेत्र और पृष्ठभूमि

हिसार जिला, जो हरियाणा राज्य में स्थित है, एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और कृषि-आर्थिक केंद्र है। जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, इसका क्षेत्रफल लगभग 3,984 वर्ग किलोमीटर है और यह नौ खंडों में विभाजित है। इन खंडों में हिसार प्रथम, हिसार द्वितीय, हांसी प्रथम, हांसी द्वितीय, बारवाला, अग्रोहा, आदमपुर, नारनौद और उकलाना शामिल हैं। यह जानकारी एसएचजी वितरण के भौगोलिक विश्लेषण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

हरियाणा राज्य में एसएचआरएलएम की सार्वजनिक जानकारी से पता चलता है कि यह मिशन 143 ब्लॉकों और 22 जिलों तक फैला हुआ है। इसके तहत लगभग 49,102 स्वयं सहायता समूह, 4,913 ग्राम संगठन और 247 समूह स्तरीय संघ शामिल हैं। एसएचआरएलएम के अनुसार, प्रत्येक स्वयं सहायता समूह को 10,000 रुपये का रिवॉल्विंग फंड और 50,000 रुपये का सीआईएफ सहायता प्रदान की जाती है, जिससे उनकी संस्थागत क्षमता और बैंक योग्यता में वृद्धि होती है। यही मिशन का तर्क हिसार जिले में भी लागू होता है।

## 1.7 शोध विधि

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें हमने वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक तरीके से जानकारी इकट्ठा की है। हमने आधिकारिक मिशन वेबसाइटों, जिला-स्तरीय सरकारी प्रोफाइल, और संकलित 2014-2023 स्वयं सहायता समूह डेटा का उपयोग किया है। इस चरण में हमने किसी प्राथमिक सर्वेक्षण का सहारा नहीं लिया। हमारा उद्देश्य यह है कि हम मात्रात्मक प्रवृत्तियों को समझें और उन्हें संस्थागत विकास के संदर्भ में व्याख्या करें। इसके लिए हमने हरियाणा स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन की आधिकारिक वेबसाइट का भी उपयोग किया है।

## 1.8 प्रारंभिक विश्लेषण : संस्थागत विस्तार की प्रवृत्ति"

हिसार जिले में स्वयं सहायता समूहों की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। साल 2014 में, यहाँ कुल 620 स्वयं सहायता समूह थे जिनमें 6,820 सदस्य थे, लेकिन साल 2023 में यह संख्या बढ़कर 1,650 स्वयं सहायता समूह और 18,150 सदस्य हो गई। यह वृद्धि न केवल संख्या में हुई है, बल्कि यह संस्थागत रूप से भी बहुत गहराई तक पहुँची है।

इन स्वयं सहायता समूहों का औसत आकार लगभग 11 सदस्यों का है, जो दर्शाता है कि ये समूह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के मानकों के अनुसार बनाए गए हैं। इससे सामूहिक बचत, नियमित बैठकें, और ऋण प्रबंधन बहुत संगठित तरीके से संभव हो पाए हैं।

यह वह बिंदु है जहाँ स्वयं सहायता समूह सिर्फ एक साधारण बचत ढाँचे से निकलकर स्थानीय विकास संस्था में बदल जाते हैं। दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के मुख्य सिद्धांतों में सामाजिक संगठन, समुदाय-आधारित संस्थान, और वित्तीय सशक्तिकरण को बहुत महत्व दिया गया है। इसी वजह से हिसार में स्वयं सहायता समूहों की वृद्धि को ग्रामीण महिलाओं के लिए बढ़ती संस्थागत पहुँच के संकेतक के रूप में देखा जा सकता है। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान के अनुसार, यह वृद्धि स्वयं सहायता समूहों की सफलता को दर्शाती है।

## 1.9 वर्षवार संस्थागत विस्तार का विस्तृत विश्लेषण

हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की प्रगति को समझने के लिए हमें 2014 से 2023 तक के आंकड़ों को देखना होगा। इन आंकड़ों से पता चलता है कि यह बढ़ोतरी सिर्फ संख्या में नहीं है, बल्कि इसमें मजबूत

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

संगठन और समूहों की स्थिरता भी शामिल है। महिला स्वयं सहायता समूहों की बढ़ोतरी ने न केवल महिलाओं की संख्या बढ़ाई है, बल्कि उन्हें स्थिरता और मजबूती भी दी है। यह बढ़ोतरी दिखाती है कि महिला स्वयं सहायता समूह कितने मजबूत हो गए हैं और वे अपने समुदाय में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

### 1.9.1 स्वयं सहायता समूह संख्या एवं सदस्यता का प्रवृत्ति विश्लेषण

नीचे दी गई तालिका वर्षवार वृद्धि को दर्शाती है:

| वर्ष | कुल स्वयं सहायता समूह | कुल सदस्य | औसत सदस्य प्रति स्वयं सहायता समूह |
|---|---|---|---|
| 2014 | 620 | 6,820 | 11 |
| 2017 | 1,065 | 11,715 | 11 |
| 2020 | 1,431 | 15,741 | 11 |
| 2023 | 1,650 | 18,150 | 11 |

इस डेटा से तीन महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं:

- पहली, 2014 से 2019 के बीच बहुत तेजी से वृद्धि हुई, जो स्वयं सहायता समूह के शुरुआती चरण में विस्तार को दर्शाती है।
- दूसरी, 2020-21 में कोविड-19 महामारी के कारण वृद्धि की गति धीमी हो गई, लेकिन इसमें गिरावट नहीं आई।
- तीसरी, 2022-23 में फिर से तेजी से विस्तार हुआ, जो संस्था की स्थिरता को दर्शाता है।

यह प्रवृत्ति दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के मॉडल के अनुरूप है, जिसमें पहले समाज को संगठित करना, फिर संस्थाओं को मजबूत बनाना और अंत में आर्थिक रूप से सशक्त बनाना शामिल है।

### 1.9.2 संस्थागत गुणवत्ता का विश्लेषण

केवल अधिक से अधिक स्वयं सहायता समूह होना पर्याप्त नहीं है, उनकी कार्यक्षमता भी मायने रखती है।औसतन 11 सदस्य प्रति स्वयं सहायता समूह से पता चलता है कि समूहों का आकार अच्छा है।नेशनल रूरल लाइवलीहुड मिशन के दिशानिर्देशों के अनुसार, 10 से 15 सदस्य एक आदर्श समूह आकार है, जिससे निर्णय लेना, बचत करना और ऋण प्रबंधन आसान हो जाता है।

इस स्थिरता का मतलब है:

- लोग समूह को छोड़ने से ज्यादा समूह में बने रहना पसंद करते हैं।
- समूह संगठित और अनुशासित रहते हैं
- समूह मिलकर अच्छे निर्णय लेते हैं

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

## 1.10 वित्तीय समावेशन का गहन विश्लेषण

एसएचजी आंदोलन का वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है जब यह वित्तीय प्रणाली से जुड़ता है। इस संदर्भ में, आरएफ, सीआईएफ और बैंक लिंकेज अत्यंत महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

### 1.10.1 रिवॉल्विंग फंड और कम्युनिटी इन्वेस्टमेंट फंड

| वर्ष | SHG प्राप्त RF | SHG प्राप्त CIF |
|---|---|---|
| 2014 | 0 | 0 |
| 2017 | 750 | 380 |
| 2020 | 1,310 | 1,010 |
| 2023 | 1,550 | 1,380 |

यह तालिका स्पष्ट करती है कि:

- प्रारंभिक वर्षों में वित्तीय सहायता नगण्य थी
- 2016 के बाद तेजी से विस्तार हुआ
- 2023 तक अधिकांश SHG को RF और CIF मिल चुका है

व्याख्या: रिवॉल्विंग फंड ₹30,000 और सामूहिक निवेश फंड ₹50,000 तक स्वयं सहायता समूहों के लिए पूंजी का कार्य करते हैं। इनका प्रभाव तीन स्तरों पर देखा जा सकता है:

- आर्थिक गतिविधियों की शुरुआत करने में मदद मिलती है।
- ऋण लेने की क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे वे अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा सकते हैं।
- आत्मविश्वास और वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के लिए फायदेमंद होता है।

### 1.10.2 बैंक लिंकेज और ऋण प्रवाह

| वर्ष | बैंक ऋण खाते | वितरित ऋण (₹ लाख) |
|---|---|---|
| 2015 | 180 | 225 |
| 2018 | 780 | 1480 |
| 2020 | 1120 | 2380 |
| 2023 | 1450 | 3750 |

यह जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाती है कि कैसे SHG भारत की औपचारिक वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बन रहे हैं।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

प्रमुख निष्कर्ष:

- बैंक खातों की संख्या 8 गुना बढ़ गई है
- ऋण की राशि लगभग 16-17 गुना बढ़ गई है
- यह वृद्धि लगातार हो रही है, यहां तक कि महामारी के दौरान भी

विश्लेषण

इस वृद्धि से यह स्पष्ट होता है कि:

- बैंक SHG पर भरोसा कर रहे हैं
- SHG अब ऋण के योग्य हो गए हैं
- ग्रामीण महिलाओं की वित्तीय स्थिति मजबूत हुई है

NABARD की एक रिपोर्ट के अनुसार, SHG-Bank Linkage Programme भारत में वित्तीय समावेशन का सबसे सफल तरीका है। हिसार जिले के आंकड़े इस राष्ट्रीय रुझान की पुष्टि करते हैं।

## 1.11 ब्लॉकस्तरीय असमानता और वितरण विश्लेषण-

### 1.11.1 ब्लॉक-वार SHG वितरण

| ब्लॉक | SHG | सदस्य |
|---|---|---|
| हिसार-I | 220 | 2420 |
| हांसी-I | 195 | 2145 |
| अग्रोहा | 180 | 1980 |
| बरवाला | 165 | 1815 |

यह वितरण कुछ महत्वपूर्ण बातें दिखाता है:

विश्लेषण

1. संतुलित विकास - यहाँ किसी एक ब्लॉक में अत्यधिक केंद्रित नहीं है।
2. समावेशी विकास - यह सभी क्षेत्रों में समान रूप से फैला हुआ है।
3. सभी क्षेत्रों में पहुंच - इसका मतलब है कि यह वितरण सभी जगहों पर है।
4. जनसंख्या आधारित वितरण - अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में अधिक समूह हैं।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 1.11.2 भौगोलिक समानता का महत्व

ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में अक्सर एक बड़ी समस्या यह होती है कि विकास केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रह जाता है। यह एक आम बात है जिसका सामना कई ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है।
परंतु हिसार में स्थिति कुछ अलग है।
यहाँ पर:

- सभी 9 ब्लॉकों में स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं और वे अपना काम बहुत अच्छी तरह से कर रहे हैं।
- वितरण में बहुत कम अंतर है, जिसका मतलब है कि संसाधनों और सुविधाओं का वितरण लगभग सभी क्षेत्रों में समान रूप से हो रहा है।
- यह नीति-आधारित विस्तार का परिणाम है, जो दिखाता है कि यहाँ की नीतियाँ और योजनाएँ वास्तव में काम कर रही हैं।

यह सब हरियाणा स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन, यानी HSRLM की रणनीति को दर्शाता है, जिसमें "सार्वभौमिक सामाजिक गतिशीलता" पर बहुत जोर दिया गया है। यह रणनीति वास्तव में बहुत प्रभावी साबित हो रही है और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक मिसाल कायम कर रही है।

## 1.12 सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण

SHG सिर्फ पैसे कमाने वाली संस्था नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलाव लाने का एक तरीका भी है।

### 1.12.1 आर्थिक प्रभाव

- महिलाओं की कमाई में इजाफा
- आत्मरोजगार के मौके
- कृषि और छोटे उद्यमों में निवेश

### 1.12.2 सामाजिक प्रभाव

- निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी
- आत्मविश्वास में बढ़ोतरी
- सामाजिक पहचान में सुधार

### 1.12.3 संस्थागत प्रभाव

- गांव स्तर पर सामूहिक संगठन
- स्थानीय नेतृत्व का विकास
- सरकारी योजनाओं की जानकारी और पहुंच

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 1.12.4 COVID-19 का प्रभाव

महामारी के दौरान:

- एसएचजी का विस्तार धीमा हो गया
- लेकिन इसकी संरचना बनी रही
- बैंकों से जुड़ाव जारी रहा

यह दर्शाता है कि एसएचजी एक मजबूत संस्था है।

## 1.13 प्रमुख चुनौतियाँ

प्रगति उल्लेखनीय है, लेकिन कुछ समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं:

1. सभी स्वयं सहायता समूहों को सामान्य वित्तीय सूचना नहीं मिल पाई है।
2. आय में वृद्धि को मापने का कोई स्पष्ट तरीका नहीं है।
3. बाज़ार तक पहुंच सीमित है।
4. डिजिटल साक्षरता की कमी है।
5. ऋण वापसी के आंकड़े कम हैं।

## 1.14 सैद्धांतिक विश्लेषण (Theoretical Interpretation)

हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों का विकास एक बड़ी प्रशासनिक सफलता है, लेकिन यह व्यापक ग्रामीण विकास सिद्धांतों से भी मेल खाता है।

### 1.14.1 सामाजिक पूंजी सिद्धांत ((□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□

रॉबर्ट पुटनम के सामाजिक पूंजी सिद्धांत के अनुसार, जब लोग एक साथ मिलकर काम करते हैं, तो वे एक-दूसरे पर भरोसा करना शुरू कर देते हैं, मजबूत संबंध बनाते हैं और एक-दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। हिसार जिले के स्वयं सहायता समूह इसी का एक अच्छा उदाहरण हैं:

- समूह के सदस्यों ने एक-दूसरे पर भरोसा करना शुरू कर दिया।
- बचत और ऋण के माध्यम से सहयोग बढ़ा।
- महिलाओं के बीच मजबूत संबंध बन गए।

इस प्रकार, ये समूह सिर्फ आर्थिक मदद नहीं दे रहे, बल्कि वे सामाजिक संबंध बनाने और मजबूत करने का भी एक महत्वपूर्ण तरीका बन गए हैं।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 1.14.2 महिला सशक्तिकरण सिद्धांत (□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□)

अमर्त्य सेन के "क्षमता दृष्टिकोण" के अनुसार, विकास का अर्थ केवल आय में वृद्धि करना नहीं है, बल्कि व्यक्तियों की क्षमताओं को विकसित करना और बढ़ावा देना है। जब हम स्वयं सहायता समूहों की बात करते हैं, तो यह महिलाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं में कई महत्वपूर्ण क्षमताओं का विकास होता है, जिनमें शामिल हैं:

- आर्थिक क्षमता, जैसे कि आय उत्पन्न करने की क्षमता
- सामाजिक क्षमता, जैसे कि निर्णय लेने में सक्षम होना
- संस्थागत क्षमता, जैसे कि समूह में भाग लेना और योगदान देना

इन तीनों क्षमताओं के विकास से, महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से मजबूत बनाया जा रहा है, बल्कि उन्हें सामाजिक और संस्थागत रूप से भी सक्षम बनाया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं दी है, बल्कि उन्हें समाज में एक सक्षम और सशक्त व्यक्ति के रूप में स्थापित करने में मदद की है।

### 1.14.3 समावेशी विकास सिद्धांत ((□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□)

समावेशी विकास का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचें। हिसार जिले के ब्लॉक-स्तरीय समान वितरण से यह बात स्पष्ट होती है कि:

- विकास केवल एक ही जगह पर केंद्रित नहीं रहा, बल्कि इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है।
- विकास की योजनाओं में सभी क्षेत्रों को शामिल किया गया है, ताकि कोई भी क्षेत्र पीछे न रह जाए।
- ग्रामीण महिलाओं तक भी समान अवसर और सुविधाएँ पहुँचाई गई हैं, जिससे वे भी विकास का हिस्सा बन सकें।

## 1.15 समेकित विश्लेषण (Integrated Discussion)

पूरे अध्ययन को एक साथ देखने पर कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आती हैं:

### 1.15.1 मात्रात्मक बनाम गुणात्मक विकास

स्वयं सहायता समूहों की संख्या में वृद्धि (620 से बढ़कर 1650 हो गई) यह दिखाती है कि इसमें काफी तरक्की हुई है, जबकि:

- बैंक से जुड़ाव
- वित्तीय मदद
- समूह की स्थिरता

यह बताते हैं कि गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है।

इन दोनों का संतुलन ही इस मॉडल की सफलता का मुख्य कारण है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 1.15.2 संस्थागत सुदृढ़ीकरण ((□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□

SHG → Village Orgaization → Cluster Level Federation

यह संरचना DAY-NRLM की मुख्य रीढ़ है।

हिसार जिले में SHG का विस्तार इस बहुस्तरीय संस्थागत ढांचे की नींव को मजबूत करता है।

### 1.15.3 वित्तीय समावेशन की गहराई

डेटा से यह स्पष्ट होता है कि:

- SHG बैंकिंग प्रणाली से जुड़ गए हैं
- ऋण प्रवाह में लगातार वृद्धि हुई है
- महिलाएं औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन गई हैं

यह भारत सरकार के वित्तीय समावेशन लक्ष्य के अनुरूप है।

## 1.16 उन्नत नीतिगत सुझाव (Advanced Policy Recommendations)

### 1.16.1 वित्तीय गहराई बढ़ाना (□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ )

- SHG को छोटे व्यवसाय ऋण से जोड़ना
- ब्याज सहायता योजनाओं का विस्तार करना
- डिजिटल क्रेडिट स्कोरिंग प्रणाली लागू करना

### 1.16.2 से उद्यमिता तक □□□((□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□

- SHG से उत्पादक समूहों और फिर FPO मॉडल बनाना
- कृषि डेयरी और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में मूल्य शृंखला को एकीकृत करना
- क्लस्टर आधारित उद्यम विकास पर ध्यान देना

### 1.16.3 डिजिटल समावेशन

- सभी SHG को डिजिटल बैंकिंग से जोड़ना
- UPI के माध्यम लेन-देन करना
- मोबाइल आधारित लेखा प्रणाली का उपयोग करना

### 1.16.4 बाज़ार एकीकरण ((□□□□□□□□ □□□□□□□

- SHG द्वारा बनाए गए उत्पादों के लिए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म बनाना
- सरकारी खरीदारी के लिए GeM पोर्टल का उपयोग करना
- स्थानीय हाट और ग्रामीण मार्ट का विकास करना

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 1.16.5 क्षमता निर्माण (□□□□□□□□□ □□□□□□□□□)

- वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करना
- उद्यमिता कौशल विकास, पर ध्यान केंद्रित करना
- विकास कार्यक्रम आयोजित करना

### 1.16.6 निगरानी एवं मूल्यांकन ((□□□□□□□□□□□ & □□□□□□□□□□□

- वास्तविक समय डैशबोर्ड बनाना
- प्रभाव मूल्यांकन के लिए संकेतक विकसित करना
- सामाजिक ऑडिट तंत्र लागू करना

## 1.17 अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन कुछ सीमाओं के साथ किया गया है:

1. यह पूरी तरह से द्वितीयक डेटा पर आधारित है, जो कि पहले से इकट्ठा किए गए डेटा पर निर्भर करता है।
2. हमारे पास आय वृद्धि का सीधा डेटा उपलब्ध नहीं है, जो कि विश्लेषण को प्रभावित कर सकता है।
3. सामाजिक प्रभाव का गुणात्मक अध्ययन सीमित है, जिसका अर्थ है कि हमने इस पहलू पर बहुत गहराई से नहीं जांचा है।
4. ब्लॉक-स्तरीय सूक्ष्म अंतरों का गहन विश्लेषण नहीं किया गया है, जो कि विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट परिवर्तनों को समझने में मदद कर सकता था।

## 1.18 भविष्य की अनुसंधान दिशाएँ (Future Research Directions)

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं जिनका अध्ययन किया जा सकता है:

1. स्वयं सहायता समूहों का आय पर प्रभाव: यह देखना दिलचस्प होगा कि स्वयं सहायता समूह कैसे महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकते हैं।
2. महिला नेतृत्व और राजनीतिक भागीदारी: महिलाओं का नेतृत्व और राजनीति में उनकी भागीदारी कैसे स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से बढ़ सकती है, यह एक महत्वपूर्ण विषय है।
3. डिजिटल स्वयं सहायता समूह मॉडल का अध्ययन: डिजिटल तकनीक कैसे स्वयं सहायता समूहों को मजबूत बना सकती है और उनकी पहुंच बढ़ा सकती है, इस पर गहराई से विचार किया जा सकता है।
4. स्वयं सहायता समूह आधारित उद्यमिता का आर्थिक विश्लेषण: स्वयं सहायता समूहों द्वारा चलाए जा रहे उद्यमों का आर्थिक विश्लेषण करना और उनकी वृद्धि के अवसरों को समझना महत्वपूर्ण है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

5. जिला-स्तरीय तुलनात्मक अध्ययन: विभिन्न जिलों में स्वयं सहायता समूहों की स्थिति और प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करने से हमें उनकी सफलता और चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है।

## 1.19 निष्कर्ष(Conclusion)

इस अध्ययन से यह साफ होता है कि हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों का विस्तार दिन-प्रतिदिन राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

2014 से 2023 के बीच:

- स्वयं सहायता समूहों की संख्या में लगभग 166% वृद्धि हुई
- सदस्यता तीन गुना हुई
- बैंक लिंकेज और ऋण प्रवाह में तीव्र वृद्धि हुई

यह केवल एक प्रशासनिक उपलब्धि नहीं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

स्वयं सहायता समूह ने:

- महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया
- सामाजिक रूप से सशक्त किया
- संस्थागत रूप से संगठित किया

भविष्य में यदि:

- डिजिटल सशक्तिकरण
- बाजार एकीकरण
- कौशल विकास

पर अधिक ध्यान दिया जाए, तो यह मॉडल ग्रामीण विकास का एक स्थायी और प्रभावी माध्यम बन सकता है। हिसार जिले का स्वयं सहायता समूह मॉडल यह दर्शाता है कि "ग्रामीण विकास केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि संगठित समुदायों से संभव होता है।"

स्वयं सहायता समूह इस परिवर्तन का आधार हैं — जहाँ महिलाएँ केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास की भागीदार बनती हैं।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

## 1.20 संदर्भ सूची

हरियाणा स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन (एचएसआरएलएम) ने 2023 में दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन को लागू किया। इसकी जानकारी आप उनकी वेबसाइट पर देख सकते हैं: https://hsrlm.gov.in

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के लिए 2023 में कुछ नियम बनाए हैं। अगर आप और जानकारी चाहते हैं, तो आप इस पते पर जा सकते हैं: https://rural.gov.in

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान 2016 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन प्रशिक्षण पुस्तिका प्रकाशित की है, जो यहाँ उपलब्ध है: https://nirdpr.org.in

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक ने 2022 में भारत में स्वयं सहायता समूह–बैंक लिंकिंग कार्यक्रम की स्थिति रिपोर्ट प्रकाशित की है।

भारत सरकार ने 2011 में जनगणना 2011 की जिला हिसार प्रोफ़ाइल जारी की थी, जिसे आप यहाँ देख सकते हैं: https://censusindia.gov.in

जिला प्रशासन, हिसार ने 2023 में हिसार जिला प्रोफ़ाइल एवं प्रशासनिक संरचना की जानकारी प्रदान की है, जो यहाँ उपलब्ध है: https://hisar.gov.in

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने 2024 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन प्रगति रिपोर्ट एवं MIS डेटा जारी किया है, जिसे आप यहाँ देख सकते हैं: https://nrlm.gov.in

द्रष्टि IAS ने 2023 में स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम का विश्लेषण किया है, जो यहाँ उपलब्ध है: https://www.drishtiias.com

हरियाणा सरकार ने 2022 में 'हरियाणा सांख्यिकीय हैंडबुक 2021-22' जारी की। यह हैंडबुक आर्थिक एवं सांख्यिकी संगठन, हरियाणा द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों पर आधारित है।

Research Publish Journals ने 2022 में हरियाणा में महिलाओं की स्थिति पर जिला स्तरीय विश्लेषण किया है।

SMS वाराणसी ने 2024 में ग्रामीण हरियाणा में स्वयं सहायता समूह आंदोलन का अध्ययन किया है, जो मैनेजमेंट इनसाइट जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

भारत सरकार ने 2023 में दीनदयाल अंत्योदय योजना - NRLM आधिकारिक पोर्टल डेटा जारी किया है, जिसे आप यहाँ देख सकते हैं: https://aajeevika.gov.in

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

Origional Research Article

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

# महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का सामाजिक सशक्तिकरण पर ऐतिहासिक प्रभाव: निर्णय-निर्माण और सार्वजनिक भागीदारी का विश्लेषण, हिसार जिला, हरियाणा (2001-2022)

वीरेंदर श्योरान
सिंघानिया विश्वविद्यालय

## 2.1 सारांश

यह शोध-पत्र हरियाणा के हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों के सामाजिक सशक्तिकरण पर दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन करता है।अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सदस्यता ने ग्रामीण महिलाओं के पारिवारिक निर्णय-निर्माण, घरेलू संसाधनों पर नियंत्रण, शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों, सार्वजनिक भागीदारी तथा पंचायती राज संस्थाओं में उनकी भूमिका को किस प्रकार प्रभावित किया।डीएवाई-एनआरएलएम की आधिकारिक अवधारणा के अनुसार, यह मिशन ग्रामीण गरीब परिवारों को समुदाय-आधारित संस्थाओं के माध्यम से संगठित कर गरीबी उन्मूलन और आजीविका सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित है।हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एचएसआरएलएम) हरियाणा में इस मिशन को 143 ब्लॉकों और 22 जिलों में लागू कर रहा है।हिसार जिले का चयन, जिसकी जनसंख्या 17,43,931 है और क्षेत्रफल 3,983 वर्ग किलोमीटर है, इस विश्लेषण के लिए एक उपयुक्त सामाजिक-भौगोलिक क्षेत्र प्रस्तुत करता है।एनआईआरडीपीआर के आंकड़ों के अनुसार, 2001 से 2022 के बीच हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या 78 से बढ़कर 3,847 हो गई और बैंक लिंकेज 12 से बढ़कर 3,539 तक पहुँच गया।इसी अवधि में सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक 22.8 से बढ़कर 80.7 तक पहुँच गया।यह वृद्धि केवल आर्थिक सहभागिता नहीं, बल्कि सामाजिक भूमिका, आत्मविश्वास, निर्णय-क्षमता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के विस्तार का भी संकेत देती है।

## 2.2 प्रस्तावना

भारत में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण संस्था बन गए हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, जिसे भारत सरकार ने जून 2010 में शुरू किया और 3 जून 2011 को औपचारिक रूप से लॉन्च किया, का मुख्य उद्देश्य गरीबों को सशक्त बनाना है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

मिशन की मुख्य अवधारणा यह है कि गरीब लोगों में अपनी गरीबी से बाहर निकलने की क्षमता होती है, और उन्हें संगठित करने के लिए समुदाय-आधारित संस्थाओं की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि महिला स्वयं सहायता समूहों को केवल बचत समूहों के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की इकाइयों के रूप में देखा जाता है।

हरियाणा में हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अनुसार, मिशन 143 ब्लॉकों और 22 जिलों में फैला हुआ है और वर्तमान में 5,87,737 परिवार 59,102 स्वयं सहायता समूहों के अंतर्गत संगठित हैं। यह व्यापक संस्थागत ढांचा इस बात का प्रमाण है कि ग्रामीण आजीविका नीति अब केवल अनुदान पर आधारित नहीं, बल्कि समुदाय-आधारित मोबिलाइजेशन, बैंक लिंकेज, संघ निर्माण और आजीविका प्रोत्साहन पर आधारित है।

हिसार जिला इस अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखता है। सरकारी जनगणना और सांख्यिकीय अभिलेखों के अनुसार, यह जिला कृषि-प्रधान सामाजिक संरचना, अपेक्षाकृत विस्तृत ग्रामीण जनसंख्या और 9 खंडों के कारण स्वयं सहायता समूह विस्तार के लिए एक उपयुक्त केस-स्टडी क्षेत्र है। जिले की कुल जनसंख्या 17,43,931 है, जिसमें पुरुष 11,90,443 और महिलाएं 5,53,488 हैं। ग्रामीण आबादी का अनुपात भी काफी बड़ा है, जिससे महिला-आधारित सामुदायिक संस्थाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

## 2.3 शोधसमस्या और अवधारणात्मक ढाँचा

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि क्या हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता ने वास्तव में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव लाया है। यहाँ सामाजिक सशक्तिकरण को चार मुख्य पहलुओं में बांटा गया है: निर्णय लेने की क्षमता, आर्थिक नियंत्रण, सामाजिक गतिशीलता, और सार्वजनिक भागीदारी। एक सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक बनाया गया है जो इन्हीं पहलुओं पर आधारित है और समय के साथ होने वाली प्रगति को मापने का प्रयास करता है।

यह अवधारणात्मक ढाँचा काबेर के संसाधन, एजेंसी, और उपलब्धियों के सिद्धांत से मेल खाता है, जहाँ सशक्तिकरण को केवल संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं रखा जाता, बल्कि निर्णय लेने की क्षमता और उसके परिणामों के रूप में देखा जाता है। सामाजिक पूंजी और सामूहिक कार्रवाई के सिद्धांत भी बताते हैं कि समूह में शामिल होने से महिलाओं को सामाजिक नेटवर्क, आत्मविश्वास, और सार्वजनिक आवाज मिलती है। दिए गए गुणात्मक साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को घर से बाहर निकलकर बैंक, बाजार, पंचायत, और सरकारी कार्यालयों तक पहुँचने की क्षमता प्रदान की है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

## 2.4 अध्ययन की अवधि और विभाजन

इस अध्ययन को तीन चरणों में समझा जा सकता है, जो हले चरण मेंसे 2022 तक फैला है। प 2001, महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन शुरू हुआ, लेकिन यह काफी सीमित था। दूसरे चरण में, जो लगभग से 2011 के बीच था 2007, इन समूहों ने अपने आप को मजबूत किया और बैंकों से जुड़कर अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने का प्रयास किया।

तीसरे चरण में, जो द शुरू हुआके बा 2012, सरकार की राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन योजना ने इन समूहों को और भी व्यवस्थित और व्यापक बनाने में मदद की। इस चरण में समाज में एकजुटता, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराना, और सरकार के साथ मिलकर काम करने जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। यह चरण वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ, क्योंकि इसमें समाज को संगठित करने, आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को मदद पहुंचाने, और सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए एक मजबूत नींव रखी गई।

| चरण | अवधि | प्रमुख विशेषता |
|---|---|---|
| प्रथम चरण | 2001-2006 | प्रारंभिक गठन, NGO और राज्य पहलों पर निर्भरता |
| द्वितीय चरण | 2007-2011 | स्वायत्त संस्थागत विस्तार और बैंक संपर्क |
| तृतीय चरण | 2012-2022 | DAY-NRLM के तहत व्यापक प्रसार और सशक्तिकरण |

## 2.5 शोधविधि

यह अध्ययन मिश्रित तरीके से किया गया है। इसमें 40 ग्राम पंचायतों, 150 सक्रिय स्वयं सहायता समूह, लगभग 1200 महिला उत्तरदाताओं, 20 समूह-नेत्रियों, 8 फोकस समूह चर्चाओं और पंचायत प्रतिनिधियों के अनुभव शामिल हैं। यह डिज़ाइन मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरह के सामाजिक बदलाव को समझने की कोशिश करता है। आपके मसौदे में प्रस्तुत यह क्षेत्र-आधारित संरचना इस शोध को सिर्फ संख्यात्मक रिपोर्ट नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का अनुभव आधारित अध्ययन बनाती है।

द्वितीयक स्रोत के रूप में एचएसआरएलएम की वार्षिक रिपोर्ट, हरियाणा सांख्यिकीय सार, भारत की जनगणना के ज़िला अभिलेख, महिला और बाल विकास विभाग की रिपोर्ट और डे-एनआरएलएम से

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। एनआरएलएम के आधिकारिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शक दस्तावेज स्वयं सहायता समूहों के बैंक-लिंकेज, समूह-आधारित वित्तीय समावेशन और समुदाय-आधारित संस्थागत सुदृढ़ीकरण पर बल देते हैं, इसलिए यह अध्ययन उन्हीं नीति उद्देश्यों के अनुरूप है। (एनआईआरडीपीआर)

## 2.6 प्रारंभिक विश्लेषण: हिसार में SHG का ऐतिहासिक विस्तार

आपके संकलित आंकड़ों के अनुसार 2001 में हिसार जिले में केवल 78 महिला स्वयं सहायता समूह थे, जो 2022 तक बढ़कर 3,847 हो गए। सदस्यता 936 से बढ़कर 46,164 तक पहुँची। बैंक लिंकेज 12 से बढ़कर 3,539 हुआ और बैंक लिंकेज प्रतिशत 15.4 से बढ़कर 92.0 तक गया। यह न केवल समूह-गठन की सफलता का सूचक है, बल्कि संस्थागत स्थायित्व और वित्तीय विश्वास का भी प्रमाण है।

यह विस्तार बताता है कि स्वयं सहायता समूह आंदोलन हिसार में एक सीमित बचत मॉडल से आगे बढ़कर सामाजिक संघटन की एक व्यापक व्यवस्था बन गया। बैंक लिंकेज का इतना बड़ा विस्तार इस बात की पुष्टि करता है कि महिलाएँ अब औपचारिक वित्तीय संस्थाओं से जुड़ने में अधिक सक्षम और विश्वसनीय मानी जाने लगी हैं। सामाजिक सशक्तिकरण की दृष्टि से यह परिवर्तन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वित्तीय पहचान अक्सर सामाजिक पहचान और सार्वजनिक भागीदारी के विस्तार का मार्ग बनती है।

## 2.7 सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ और अध्ययन की प्रासंगिकता

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ केवल आर्थिक आय से नहीं है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें महिलाएं अपने परिवार, समुदाय और सार्वजनिक संस्थाओं में निर्णय लेती हैं, अपनी राय व्यक्त करती हैं, संसाधनों पर प्रभाव डालती हैं और सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करती हैं। आपके अध्ययन में घर-बजट नियंत्रण, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी निर्णय, ग्रामसभा में उपस्थिति, बोलने की क्षमता, पंचायतों में प्रतिनिधित्व और नेतृत्व विकास जैसे महत्वपूर्ण संकेतकों को सशक्तिकरण के वास्तविक सूचक के रूप में अपनाया गया है। यही कारण है कि यह शोध स्वयं सहायता समूहों को सिर्फ एक छोटे वित्तीय समूह के रूप में नहीं, बल्कि नागरिकता और नेतृत्व के प्रशिक्षण-स्थल के रूप में प्रस्तुत करता है।

## 2.8 पारिवारिक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका

महिला स्वयं सहायता समूहों का सबसे सीधा असर घर के भीतर दिखता है। आपके शोध में सर्वेक्षण से मिले आंकड़े यह साफ दिखाते हैं कि स्वयं सहायता समूह की सदस्यता ने महिलाओं की फैसले लेने की ताकत को बहुत बढ़ाया है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 2.8.1 निर्णय-निर्माण का तुलनात्मक विश्लेषण

| निर्णय क्षेत्र | 2001–05 (%) | 2006–11 (%) | 2012–17 (%) | 2018–22 (%) |
|---|---|---|---|---|
| घर-बजट | 22.4 | 41.8 | 64.3 | 78.6 |
| शिक्षा | 31.5 | 52.7 | 71.2 | 84.3 |
| स्वास्थ्य | 28.7 | 48.3 | 68.9 | 81.2 |
| कृषि निर्णय | 15.8 | 29.6 | 48.7 | 62.4 |
| संपत्ति खरीद | 12.3 | 24.1 | 39.5 | 54.8 |
| ऋण उपयोग | 38.6 | 58.4 | 76.8 | 88.3 |

यह तालिका दर्शाती है कि 20 वर्षों में महिलाओं की औसत निर्णय भागीदारी 24.9% से बढ़कर लगभग 75% तक पहुँच गई।

### 2.8.2 विश्लेषण

पहला, आर्थिक फैसलों में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी देखी गई, जैसे कि ऋण और बजट संबंधी मामले, जो स्वयं सहायता समूहों की वित्तीय स्थिति को उजागर करते हैं।

दूसरा, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्रों में भी काफी वृद्धि हुई, जो सशक्तिकरण के व्यापक प्रभाव को प्रदर्शित करती है।

तीसरा, संपत्ति से जुड़े फैसलों में अपेक्षाकृत कम वृद्धि इस बात का संकेत देती है कि पितृसत्तात्मक संरचनाएं अभी भी अपना प्रभाव बनाए हुए हैं।

## 2.9 आर्थिक नियंत्रण और घरेलू संसाधनों पर अधिकार

### 2.9.1 बजट नियंत्रण: SHG बनाम गैर-SHG

| स्तर | SHG सदस्य (%) | गैर-सदस्य (%) |
|---|---|---|
| कोई नियंत्रण नहीं | 8.4 | 42.7 |
| कम नियंत्रण | 15.8 | 31.5 |
| मध्यम नियंत्रण | 32.6 | 18.9 |
| अच्छा नियंत्रण | 28.7 | 5.6 |
| पूर्ण नियंत्रण | 14.5 | 1.3 |

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

यह तुलना स्पष्ट करती है कि SHG सदस्य महिलाओं में आर्थिक नियंत्रण का स्तर काफी अधिक है।

### 2.9.2 विश्लेषण

- महिला स्वयं सहायता समूह में "अच्छा या पूर्ण नियंत्रण" 43% महिलाओं में है
- गैर में यह केवल सदस्य महिलाओं-6-7% है

यह अंतर साबित करता है कि स्वयं सहायता समूह न केवल महिलाओं की आय में वृद्धि करते हैं, बल्कि उन्हें आर्थिक निर्णय लेने की शक्ति भी प्रदान करते हैं।

## 2.10 शिक्षा और स्वास्थ्य में महिलाओं की भूमिका

### 2.10.1 शिक्षा संबंधी निर्णय

| संकेतक | 2001–06 | 2019–22 |
|---|---|---|
| स्कूल चयन | 28.5 | 82.7 |
| उच्च शिक्षा | 18.6 | 74.5 |
| शिक्षा व्यय | 32.4 | 85.3 |

### 2.10.2 विश्लेषण

- लड़कियों की शिक्षा में भाग लेने वाले लोगों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है।
- परिवारों में शिक्षा को अब सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता है।
- लड़कों और लड़कियों के बीच के अंतर में सुधार हो रहा है।

### 2.10.3 स्वास्थ्य संबंधी निर्णय

| संकेतक | 2001–06 | 2019–22 |
|---|---|---|
| प्रसव स्थान | 34.8 | 89.4 |
| परिवार नियोजन | 42.3 | 91.7 |
| टीकाकरण | 48.6 | 94.2 |

### 2.10.4 विश्लेषण

- महिलाएं अब स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।
- माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- सरकार की योजनाएं अधिक लोगों तक पहुँच रही हैं।

यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण जैसी रिपोर्टों के नतीजों से मिलता-जुलता है, जिनमें महिलाओं के निर्णय लेने की भागीदारी को स्वास्थ्य में सुधार से जोड़ा गया है।

## 2.11 सार्वजनिक भागीदारी और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण

### 2.11.1 ग्रामसभा में भागीदारी

| संकेतक | 2001–06 | 2019–22 |
|---|---|---|
| उपस्थिति | 12.7 | 68.3 |
| बोलना | 5.8 | 53.2 |
| सुझाव देना | 3.2 | 46.5 |
| शिकायत दर्ज | 6.4 | 58.7 |

विश्लेषण

यह वृद्धि केवल संख्या नहीं, बल्कि महिलाओं की आवाज को सशक्त बनाने को दर्शाती है। महिलाएँ अब केवल उपस्थित नहीं, बल्कि सक्रिय रूप से सहभागी बन चुकी हैं और अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर रही हैं।

### 2.11.2 पंचायती राज में प्रतिनिधित्व

| स्तर | 2001 (%) | 2021 (%) |
|---|---|---|
| सरपंच | 33.4 | 50.1 |
| पंचायत समिति | 33.3 | 50.0 |
| जिला परिषद | 32.1 | 50.0 |

विश्लेषण

- महिलाओं ने लगभग ५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व हासिल किया है।
- स्वयं सहायता समूह से नेतृत्व की भूमिका में महिलाएं आगे आई हैं।
- ७७ प्रतिशत महिला सरपंच ८.स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं।

यह स्वयं सहायता समूह को नेतृत्व विकास के अवसर के रूप में स्थापित करता है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

## 2.12 नेतृत्व विकास का विश्लेषण

| संकेतक | 2001–10 | 2017–22 |
|---|---|---|
| आत्मविश्वास | 18.4 | 72.3 |
| नेतृत्व क्षमता | 12.8 | 64.8 |
| अधिकारियों से संपर्क | 8.6 | 58.7 |

विश्लेषण

- नेतृत्व स्कोर से बढ़कर 68.9 हो गया 15.4
- स्वयं सहायता समूह महिलाओं को ग्रासरूट नेता बनाते हैं

## 2.13 सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक (SEI)

| अवधि | SEI स्कोर |
|---|---|
| 2001–05 | 22.8 |
| 2011–15 | 60.2 |
| 2021–22 | 80.7 |

विश्लेषण

- कुल वृद्धि %254
- सार्वजनिक भागीदारी में सबसे अधिक वृद्धि
- DAY-NRLM के बाद तेज़ सुधार

यह सूचकांक स्पष्ट रूप से दिखाता है कि स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव वास्तव में बहुआयामी और दीर्घकालिक है।

## 2.14 गुणात्मक विश्लेषण

फील्ड डेटा से हमें पता चलता है कि एसएचजी का प्रभाव सिर्फ आंकड़ों तक ही सीमित नहीं है।
प्रमुख अनुभव हैं:

- महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ गया है

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- उन्हें परिवार में सम्मान मिल रहा है
- उन्होंने सामाजिक संबंधों का एक नेटवर्क बनाया है

एक महिला ने अपने अनुभव के बारे में बताया:
"बैंक और पंचायत के लिए अकेले जा सकती हूँ अब मैं"
यह बदलाव सामाजिक सशक्तिकरण का एक वास्तविक उदाहरण है।

## 2.15 सैद्धांतिक व्याख्या (Theoretical Interpretation)

हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव सिर्फ़ तथ्यों पर आधारित नहीं है, बल्कि यह सिद्धांत रूप से भी महत्वपूर्ण है। यह विभिन्न विकास सिद्धांतों को वास्तविक रूप में प्रमाणित करता है।

### 2.15.1 केबीर का सशक्तिकरण मॉडल

नैला केबीर के अनुसार, सशक्तिकरण तीन महत्वपूर्ण घटकों पर आधारित होता है:

- संसाधन
- क्षमता या एजेंसी
- उपलब्धियाँ

हिसार जिले में स्वयं सहायता :व इन तीनों स्तरों पर स्पष्ट देखा जा सकता हैसमूह का प्रभा
संसाधन के संदर्भ में, महिलाओं को बचत, ऋण, और अन्य वित्तीय सुविधाओं के माध्यम से आर्थिक संसाधन प्राप्त हुए हैं।
क्षमता या एजेंसी के मामले में, महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो पहले प्रतिशत थी और अब यह 75 प्रतिशत तक पहुँच गई है। 24.9
उपलब्धियों के संदर्भ में, सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक में भी महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है, जो 22.8 से बढ़कर 80.7 तक पहुँच गया है।
यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि स्वयं सहायता माध्यम नहीं है समूह केवल आर्थिक सशक्तिकरण का , बल्कि यह समग्र सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

### 2.15.2 अमर्त्य सेन का क्षमता दृष्टिकोण

अमर्त्य सेन के अनुसार, विकास का मतलब सिर्फ पैसा कमाना नहीं है, बल्कि अपने जीवन के बारे में विकल्प चुनने की आजादी होना चाहिए।
एसएचजी के माध्यम से महिलाओं को ये चीजें मिली हैं:

- आर्थिक आजादी

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- सामाजिक आजादी
- राजनीतिक आजादी

उदाहरण के लिए:

- महिलाएं अब अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य का फैसला लेती हैं
- वे पंचायत चुनावों में हिस्सा लेती हैं
- सार्वजनिक जगहों पर अपनी बात कहती हैं

## 2.16 सामाजिक पूंजी सिद्धांत

स्वयं सहायता  समूह सामूहिक नेटवर्क का निर्माण करते हैं:

- विश्वास
- सहयोग
- नेटवर्किंग

आपके अध्ययन के गुणात्मक भाग में यह स्पष्ट है कि महिलाएँ एक-दूसरे की सहायता करती हैं, जानकारी साझा करती हैं और सामूहिक निर्णय लेती हैं। यह सामाजिक पूंजी सिद्धांत के मुख्य तत्व हैं जो समूह के भीतर मजबूत संबंधों को बढ़ावा देते हैं।

## 2.17 समेकित आलोचनात्मक विश्लेषण

### 2.17.1 क्या सशक्तिकरण असली है या सिर्फ दिखावा?

आंकड़े बताते हैं कि:

- निर्णय लेने की शक्ति बढ़ रही है
- लोग अब ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक मामलों में भाग ले रहे हैं

लेकिन:

- अभी भी संपत्ति पर ज्यादा नियंत्रण नहीं है
- सामाजिक समस्याएं भी अभी भी हैं

तो, लगता है कि सशक्तिकरण कुछ हद तक वास्तविक है लेकिन कुछ हद तक सिर्फ दिखावा भी है।

### 2.17.2 संस्थागत बनाम सामाजिक परिवर्तन

स्वयं सहायता समूह ने एक मजबूत संस्थागत ढाँचा बनाया ,लेकिन कुछ समस्याएँ अभी भी हैं।

- लोगों की सोच और मानसिकता बदलने में समय लग रहा है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- पितृसत्तात्मक मानसिकता अभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है।

### 2.17.3 स्वयं सहायता समूह मॉडल की सीमाएँ

- सभी समूह समान रूप से सक्रिय नहीं हैं।
- कुछ समूहों में आंतरिक संघर्ष की स्थिति है।
- वित्तीय निर्भरता अभी भी बाहरी सहायता पर है।

## 2.18 प्रमुख चुनौतियाँ

स्वयं सहायता समूहों के विकास में कई चुनौतियाँ हैं। इनमें से कुछ प्रमुख बाधाएँ हैं:

### 2.18.1 सामाजिक बाधाएँ:

- लगभग %38.7महिलाओं को अपने परिवार से विरोध का सामना करना पड़ता है।
- लगभग %42.3 महिलाओं को समाज की आलोचना का सामना करना पड़ता है।

### 2.18.2 संस्थागत समस्याएँ:

- लगभग 31.8% समूहों में बैठकें नियमित नहीं होती हैं।
- लगभग 24.5% समूहों में नेतृत्व से संबंधित संघर्ष होते हैं।

### 2.18.3 आर्थिक बाधाएँ:

- बाजार तक पहुँच सीमित है।
- ऋण वितरण में देरी होती है।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों का विस्तार तो हुआ है, लेकिन उनकी गुणवत्ता में सुधार करना अभी भी बहुत जरूरी है।

## 2.19 उन्नत नीतिगत सुझाव

### 2.19.1 एसएचजी 2.0 मॉडल (नई पीढ़ी का एसएचजी)

- एसएचजी को छोटे उद्यम इकाई में बदलना
- एक साथ उत्पादन प्रणाली
- पूरे मूल्य शृंखला का समन्वय

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 2.19.2 डिजिटल सशक्तिकरण

- हर एसएचजी को डिजिटल बैंकिंग से जोड़ना
- मोबाइल पर आधारित लेखा प्रणाली
- डिजिटल माध्यम से विपणन

### 2.19.3 सामाजिक परिवर्तन कार्यक्रम

- पुरुषों की भागीदारी कार्यक्रम
- लिंग संवेदनशीलता अभियान
- समुदाय जागरूकता अभियान

### 2.19.4 राजनीतिक नेतृत्व विकास

- एसएचजी महिलाओं के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण
- पंचायत प्रतिनिधियों के लिए मार्गदर्शन प्रणाली

### 2.19.5 बाजार और उद्यमिता

- एसएचजी उत्पादों के लिए ब्रांड बनाना
- ऑनलाइन व्यापार मंच
- सरकारी खरीद (मार्केटप्लेस-सरकारी ई)

## 2.20 अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन में कुछ सीमाएँ हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी है।

- अध्ययन केवल हिसार जिले तक ही सीमित है, जो इसकी व्यापकता को सीमित करता है।
- कुछ डेटा स्व-रिपोर्टेड है, जो डेटा की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकता है।
- दीर्घकालिक प्रभाव का पूर्ण आकलन नहीं किया गया है, जो अध्ययन के परिणामों को और भी विस्तार से समझने के लिए आवश्यक है।
- गुणात्मक नमूना सीमित है, जो अध्ययन के परिणामों को और भी व्यापक बनाने के लिए आवश्यक है।

## 2.21 भविष्य के शोध की दिशा

भविष्य में शोध की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देना चाहिए:

- स्वयं सहायता समूह और आय वृद्धि के बीच प्रत्यक्ष संबंध का अध्ययन करना महत्वपूर्ण होगा।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- डिजिटल स्वयं सहायता समूह मॉडल का अध्ययन करना भी एक उपयोगी दिशा हो सकती है।
- अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव का अध्ययन करना भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है।
- राज्य-स्तरीय तुलनात्मक अध्ययन करना भी एक उपयोगी दिशा हो सकती है, जिससे विभिन्न राज्यों में स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

## 2.22 समेकित निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दिखाता है कि हिसार जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों ने सामाजिक परिवर्तन की एक मजबूत प्रक्रिया को शुरू किया है।

मुख्य निष्कर्ष यह हैं:

- स्वयं सहायता समूहों की संख्या में 49 गुना वृद्धि हुई है
- सामाजिक सशक्तिकरण सूचकांक में 254% की वृद्धि हुई है
- निर्णय-निर्माण में व्यापक सुधार हुआ है
- सार्वजनिक भागीदारी में 700% से अधिक की वृद्धि हुई है

स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को:

- आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है
- सामाजिक रूप से सक्रिय बनाया है
- राजनीतिक रूप से जागरूक बनाया है

## 2.23 अंतिम अंतर्दृष्टि

हिसार जिले में जो हुआ है, उससे हमें यह समझने को मिलता है:

जब महिलाएँ एकजुट होती हैं", तो वे न सिर्फ अपनी जिंदगी बदलती हैं, बल्कि पूरे समाज को एक नई दिशा देती हैं।"

महिला स्वयं सहायता समूह:

- ये सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं हैं
- बल्कि ये समाज में बदलाव लाने का एक मजबूत आधार हैं

## 2.24 संदर्भ सूची

Bali Swain, R., & Wallentin, F. Y. (2009). Does microfinance empower women? Evidence from self-help groups in India. International Review of Applied Economics, 23(5), 541–556.

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

Bali Swain, R., & Wallentin, F. Y. (2012). Factors empowering women in Indian self-help group programs. International Review of Applied Economics, 26(4), 425–444.

भारत की जनगणना. (2011). जिला जनगणना पुस्तिका: हिसार. भारत सरकार, रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त.

Chaudhary, R., & Verick, S. (2014). भारत एवं अन्य देशों में महिला श्रम बल भागीदारी. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन.

Datta, U., & Gailey, S. (2012). सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: भारत में महिला सहकारी समिति का अध्ययन. Entrepreneurship Theory and Practice, 36(3), 569–587.

Deshmukh-Ranadive, J. (2005). परिवार के संदर्भ में लैंगिक समानता: भारत में माताएँ और बहुएँ

Galab, S., & Rao, N. C. (2003). महिला स्वयं सहायता समूह, गरीबी उन्मूलन और सशक्तिकरण. Economic and Political Weekly, 38(12–13), 1274–1283.

हरियाणा सरकार. (2023). हरियाणा का सांख्यिकीय सार 2022–23. आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग.

भारत सरकार. (2021). राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) 2019–21: हरियाणा. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय.

हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन. (2022). वार्षिक रिपोर्ट 2021–22. ग्रामीण विकास विभाग, हरियाणा सरकार.

Kabeer, N. (1999). संसाधन, एजेंसी और उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार. Development and Change, 30(3), 435–464.

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

Kevane, M., & Wydick, B. (2001). महिला उद्यमियों को सूक्ष्म ऋण: आर्थिक विकास बनाम गरीबी उन्मूलन. World Development, 29(7), 1225–1236.

Malapit, H. J., Quisumbing, A. R., Meinzen-Dick, R., Seymour, G., Martinez, E. M., Heckert, J., & Yount, K. M. (2019). कृषि में महिला सशक्तिकरण सूचकांक (pro-WEAI) का विकास. World Development, 122, 675–692.

Mayoux, L. (2001). सामाजिक पूंजी और महिला सशक्तिकरण: सूक्ष्म वित्त का प्रभाव. Development and Change, 32(3), 435–464.

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2023). दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन: राज्यवार प्रगति रिपोर्ट.

Sanyal, P. (2009). सूक्ष्म वित्त से सामूहिक कार्रवाई तक: महिला सामाजिक पूंजी का विकास. American Sociological Review, 74(4), 529–550.

हरियाणा राज्य निर्वाचन आयोग. (2021). पंचायती राज चुनाव 2021: जिला-वार परिणाम.

Origional Research Article

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

# वैदिक जल प्रबंधन दर्शन और जल जीवन मिशन: आधुनिक विकास में प्राचीन सिद्धांतों की प्रासंगिकता

एक शोध अध्ययन (आपः सूक्त (ऋग्वेद 10.9 :और समकालीन जल सेवा वितरण का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉदिग्विजय सिंह राजपूत .
आईसीएसएसआर पोस्ट डॉक्टोरल फेलोइग्नू, दिल्ली ,
डॉराजेंद्र सिंह मीणा .
विभागाध्यक्षलोक प्रशासन विभाग, इग्नू, दिल्ली ,

## 19.1 सारांश

यह शोध पत्र वैदिक आपः सूक्त (ऋग्वेद 10.9) में निहित जल संरक्षण और प्रबंधन के प्राचीन सिद्धांतों को भारत के जल जीवन मिशन (JJM) के समकालीन सार्वजनिक सेवा प्रतिमान के साथ तुलनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है। जल जीवन मिशन डैशबोर्ड, जल गुणवत्ता प्रबंधन सूचना प्रणाली (WQMIS), और एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (IDSP) से प्राप्त राष्ट्रीय स्तरीय मात्रात्मक आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन ग्रामीण घरों में नल जल कवरेज, जल गुणवत्ता परीक्षण डेटा, और जलजनित रोग घटनाओं पर वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रस्तुत करता है।

वैदिक प्रबंधन सिद्धांतों - समग्र संसाधन प्रबंधन, नैतिक अनिवार्यता, समतामूलक पहुंच, और प्रकृति के साथ सामंजस्य - के प्रकाश में इन प्रवृत्तियों की व्याख्या की गई है। मध्य-2024 तक लगभग 81% ग्रामीण परिवारों में नल जल पहुंच, व्यापक जल गुणवत्ता परीक्षण अवसंरचना (2,870+ प्रयोगशालाएं), और जलजनित रोग निगरानी प्रणालियों का विस्तृत डेटा प्रस्तुत किया गया है। ऋग्वेद के जल-वंदना मंत्रों को उद्धृत करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि नैतिक नेतृत्व और संरक्षक देखभाल सतत विकास के लिए अत्यावश्यक बने रहते हैं।

अध्ययन मिशन की शक्तियों (कार्यशील नल कनेक्शन का अभूतपूर्व विस्तार), चुनौतियों (संसदीय निगरानी द्वारा उठाए गए डेटा प्रामाणिकता मुद्दे, गुणवत्ता संबंधी सतत समस्याएं), और नीतिगत दिशाओं की पहचान करता है जो आध्यात्मिक-नैतिक प्रतिमानों को डिजिटल पारदर्शिता, स्थानीय सशक्तीकरण, और रोग-जल निगरानी संबंधों के साथ संयोजित करते हैं, इस प्रकार समकालीन प्रबंधन में वैदिक सिद्धांतों को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: जल जीवन मिशन 2025, ग्रामीण भारत में नल जल कवरेज, WQMIS जल गुणवत्ता निगरानी, जलजनित रोग निगरानी IDSP, वैदिक जल प्रबंधन सिद्धांत, आपः सूक्त ऋग्वेद जल संरक्षण,

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

सतत जल सेवा वितरण, भारत में आर्सेनिक फ्लोराइड संदूषण, जन स्वास्थ्य और जल स्वच्छता, वैदिक शास्त्र प्रबंधन सिद्धांत

## 19.2 प्रस्तावना

### 19.2.1 वैदिक जल दर्शन: आपः सूक्त का महत्व

प्राचीन वैदिक सिद्धांतों मेंयह एक आध्यात्मि जल को केवल एक भौतिक वस्तु नहीं माना जाता था, बल्कि ,क शक्ति के रूप में सम्मानित किया जाता था जो जीवनकल्याण और सार्वभौमिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण , हिस्सा है। ऋग्वेद के एक विशेष सूक्त, जिसे आपः सूक्त कहा जाता है, में जल की शुद्धिकारक शक्ति और उसके म्मेदारी से संसंरक्षण की प्रशंसा की गई है। यह हमें जल का जिरक्षण और प्रबंधन करने का एक महत्वपूर्ण सबक सिखाता है।

ऋग्वेद में जल के बारे में कहा गया है“ ,आपो हि ष्ठा मयोभुवः ता न ऊर्जे दधातन”, जिसका अर्थ है“ ,हे जल , ”तुम्हीं सुख देने वाले हो, हमें बल और ऊर्जा प्रदान करो। यह मंत्र जल को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठापित करता है। आपः सूक्त में जल को “अमृता धाता” कहा गया हैजो इसके पवित्र और जीवनोपयोगी गुणों , को दर्शाता है।

वैदिक साहित्य में जल संरक्षण के कई तरीके बताए गए हैं। यजुर्वेद में स्पष्ट निर्देश दिया गया है“ ,जल को दूषित न करो और वृक्षतियों को हानिवनस्प- न पहुंचाओ।” यह पर्यावरणीय संरक्षण की एक व्यापक दृष्टि को दर्शाता हैजहां जल, वनस्पति और पूरी प्रकृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए , ।रखने और जल जैसे महत्वपूर्ण संसाधन का संरक्षण करने की महत्ता की याद दिलाता है

### 19.2.2 जल जीवन मिशनआधुनिक भारत का जल संकल्प :

भारत में, जल शक्ति मंत्रालय ने एक महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है जिसे जल जीवन मिशन कहा जाता है। यह योजना 15 अगस्त 2019 को शुरू की गई थी और इसका लक्ष्य हर ग्रामीण घर में एक कामकाजी घरेलू नल कनेक्शन देना है - यानी, “हर घर जल"।

जल जीवन मिशन का मुख्य उद्देश्य था कि 2024 तक सभी ग्रामीण घरों को कवर किया जाए, लेकिन अब इसे 2028 तक बढ़ा दिया गया है। इसका मुख्य लक्ष्य प्रति व्यक्ति प्रति दिन 55 लीटर सुरक्षित पेयजल प्रदान करना है।

यह योजना सिर्फ बुनियादी ढांचे के निर्माण तक ही सीमित नहीं है; यह पानी की गुणवत्ता, सभी के लिए समान पहुंच, और संस्थानों में पारदर्शिता पर भी ध्यान केंद्रित करती है। जल जीवन मिशन का उद्देश्य न केवल पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करना है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि यह पानी सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक हो।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, जल जीवन मिशन आपः सूक्त की भावना का एक नया रूप है, जो सार्वजनिक नीति, बुनियादी ढांचे के विकास, और सेवा वितरण की बदलती जरूरतों के अनुसार तैयार किया गया है। यह मिशन न केवल जल संचयन और प्रबंधन पर केंद्रित है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि जल संसाधनों का उपयोग न्यायसंगत और समान रूप से किया जाए।

### 19.2.3 शोध उद्देश्य और प्रश्न

यह शोध पत्र दो मुख्य विषयों को मिलाता है:

1. मात्रात्मक मूल्यांकन: राष्ट्रीय स्तर पर डेटा स्रोतों का □□□□और ,□□□□□डैशबोर्ड, □□□जैसे कि - णवत्ता परीक्षण, और जलजनित रोग निगरानी में प्रगति की उपयोग करके नल जल पहुंच, जल गु निगरानी की जाती है।
2. व्याख्यात्मक संबंध: इन प्रवृत्तियों को वैदिक प्रबंधन दर्शन जैसे कि समग्रता, नैतिक संरक्षकता, - के संदर्भ में समझाने का प्रयास किया जाता है। -समतामूलक समावेश, और सूचित शासन

आध्यात्मिकनैतिक विरासत को वैज्ञानिक तरीके से संचालित सार्वजनिक सेवा प्रावधान के साथ मिलाते हुए, यह - अध्ययन यह दिखाने की कोशिश करता है कि प्राचीन ज्ञान किस तरह से आधुनिक विकास प्रयासों को आगे बढ़ा सकता है में प्रासंगिकता को दर्शाता है। वैदिक शास्त्रों के प्रबंधन और विकास सिद्धांतों की वर्तमान समय -

## 19.3 शोध पद्धति और डेटा स्रोत

### 19.3.1डेटा स्रोत

इस अध्ययन में निम्नलिखित महत्वपूर्ण डेटा स्रोतों का उपयोग किया गया है:

जल जीवन मिशन डैशबोर्ड या इंटीग्रेटेड मैनेजमेंट इंफॉर्मेशन सिस्टम: यह राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर ग्रामीण घरेलू नल कनेक्शन कवरेज की जानकारी प्रदान करता है ,जिसमें विभिन्न तिथियों जैसे जुलाई 2023 ,मार्च ,2025और अक्टूबर के आ 2025ंकड़े शामिल हैं।

जल गुणवत्ता प्रबंधन सूचना प्रणाली: यह प्रणाली जल परीक्षण केंद्रोंप्रशिक्षित महिलाओं द्वारा लिए गए नमूनों, , प्रयोगशालाओं की संख्या को ट्रैक करती है। संदूषण के प्रतिशत, और

एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम: यह कार्यक्रम जलजनित रोगों की जिला स्तरीय निगरानी के आंकड़े प्रदान करता है। हालांकि यहां जिला स्तरीय व्यापकता के आंकड़े विस्तार से नहीं दिए गए हैंलेकिन यह प्रणाली गुणात्मक , समझने में मदद करती है। संबंधों को

समाचार रिपोर्ट और संसदीय समीक्षा: ये डेटा की गुणवत्ता और स्थानीय प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान करते हैंजैसे कि मैसूरु जिले में हुई प्रगति। ,

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 19.3.2शोध विधि

इस शोध में वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया है। हमने राष्ट्रीय स्तर पर एकत्रित डेटा का संकलन और सारांश निकाला है:जो निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित है ,

- ग्रामीण घरों में फिल्टर्ड हैंड ट्यूब वेल्स एफएचटीसी) का प्रतिशत)
- जल परीक्षण प्रयोगशालाओं की संख्याप्रशिक्षित कर्मचारी, नमूने, और संदूषण दरें ,
- चयनित जिला स्नैपशॉटजैसे कि मैसूरु ,

हमने इस जानकारी को एक सरल और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत किया है ताकि आप इसे आसानी से पढ़ और समझ सकें।

इसके अलावा, हमने इस डेटा का गहराई से विश्लेषण किया है, जिसमें हमने ऋग्वेद के आपः सूक्त में बताए गए महत्वपूर्ण सिद्धांतों को समझाया है और देखा है कि वे हमारे जीवन में कैसे उपयोगी हो सकते हैं।

नीति प्रतिबिंब में, हमने देखा है कि कहाँ-कहाँ हमें सुधार की जरूरत है और सुझाव दिए हैं कि कैसे हम वैदिक संरक्षकता को अपने आधुनिक जीवन में शामिल कर सकते हैं।

## 19.4 मात्रात्मक परिणाम और विश्लेषण

### 19.4.1 घरेलू नल जल कवरेज (□□□□□)

| तिथि स्रोत / | अनुमानित कवरेज (□□□□) | संदर्भ |
|---|---|---|
| मार्च (□□□□-□□□) 2024 | ग्रामीण घरों का %80.3 | [12] |
| जुलाई 2024 | (करोड़ में से 77.8% (15.03 करोड़ 19.32 | [18] |
| अक्टूबर 2025 | %81से अधिक 15.72)करोड़ घर( | [13] |

राज्य-वार उदाहरण (मध्य-2025):

राष्ट्रीय ग्रामीण नल जल कवरेज में प्रगति की बात करें तो कई राज्यों ने अच्छी तरक्की की है। मध्य-2025 के आंकड़ों के अनुसार, तेलंगाना, गोवा, पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, और बिहार ने लगभग पूर्ण कवरेज प्राप्त कर लिया है। यह एक बड़ी उपलब्धि है और इन राज्यों ने अपने ग्रामीण क्षेत्रों में नल जल की सुविधा को काफी हद तक पूरा कर लिया है।

हालांकि, कुछ राज्यों में अभी भी काम करने की जरूरत है। राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में नल जल कवरेज अभी भी 20-25% के आसपास है, जो कि काफी कम है। इन राज्यों को अपने ग्रामीण क्षेत्रों में नल जल की सुविधा को बढ़ाने के लिए और प्रयास करने होंगे।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

जिला उदाहरण:अब बात करते हैं जिला स्तर पर हुए काम की। मैसूरु जिले में जून 2025 तक 4.79 लाख में से 4.45 लाख ग्रामीण घरों में नल जल की सुविधा पहुंच चुकी है, जो कि 83.9% है। यह एक अच्छी प्रगति है और इससे पता चलता है कि जिला स्तर पर भी काम हो रहा है।

### 19.4.2जल गुणवत्ता परीक्षण मेट्रिक्स

| मीट्रिक | मान (अनुमानित) | संदर्भ |
|---|---|---|
| भारत में पेयजल प्रयोगशालाएं | लगभग (26-2025) 2,870 | [14] |
| -□□□प्रशिक्षित महिलाएं | लगभग (23-2022) लाख 21.5 | [20] |
| प्रयोगशालाओं में परीक्षित नमूने | लगभग (26-लाख (2025 61.66 | [14] |
| संदूषित नमूने (प्रयोगशालाएं) | रिपोर्ट किए गए संदूषित नमूने | [14] |
| आर्सेनिक(2024 → प्रभावित बस्तियां (2019- | 316 → 14,020 | [18] |
| फ्लोराइड(2024 → प्रभावित बस्तियां (2019- | 265 → 7,996 | [18] |

जल गुणवत्ता अवसंरचना और परीक्षण आयतन

एक विशेष पोर्टल बनाया गया है, जिसे वाटर क्वालिटी मैनेजमेंट इंफॉर्मेशन सिस्टम पोर्टल कहा जाता है, जो जल गुणवत्ता निगरानी को आसान बनाता है। यह पोर्टल जल नमूनों के संग्रह, रिपोर्टिंग, निगरानी और सर्वेक्षण को संभव बनाता है और जल गुणवत्ता की निगरानी में मदद करता है।

वित्त वर्ष 2025-26 में, लगभग 24.89 लाख जल नमूने 3.92 लाख गांवों से एकत्र किए गए। इन नमूनों की जांच प्रयोगशालाओं में की गई। साथ ही, 1.52 लाख गांवों से लगभग 21.92 लाख नमूने फील्ड टेस्टिंग किट का उपयोग करके परीक्षण किए गए। यह जल गुणवत्ता निगरानी कार्यक्रम जल संचयन और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह कार्यक्रम हमें साफ पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद कर रहा है।

### 19.4.3जलजनित रोग निगरानी (□□□□)

इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम, यानी आईडीएसपी, की पहुंच ७४१ जिलों में है और यहां ९० प्रतिशत से ज्यादा सबमिशन दरों के साथ कवरेज है। इसका मतलब है कि आईडीएसपी जलजनित महामारियों जैसे दस्त, हैजा, और आंत्र ज्वर का जल्दी पता लगाने में मदद करती है।

### 19.4.4विश्लेषणात्मक चर्चा

जल जीवन मिशन के तहत प्रगति और चुनौतियां:

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

जल जीवन मिशन के आंकड़ों से पता चलता है कि इसमें काफी प्रगति हुई है, लेकिन कुछ समस्याएं भी हैं। 2019 में 17% से 2024-25 तक 80% से अधिक की वृद्धि एक बड़ी उपलब्धि है।

कुछ राज्यों में बहुत अधिक अंतर है। लगभग 100% कवरेज वाले राज्य जैसे तेलंगाना, गोवा, पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश और बिहार में प्रशासनिक उत्साह और आसान भूगोल ने लगभग-सार्वभौमिक कवरेज को तेज किया है। दूसरी ओर, पिछड़े राज्य जैसे राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तर प्रदेश में लगभग 20-25% कवरेज है, जो संरचनात्मक समस्याओं, बिखरी बस्तियों, खराब भूजल क्षमता और कमजोर संस्थागत क्षमता के कारण हो सकता है।

जल गुणवत्ता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं:

जल जीवन मिशन के तहत कवरेज को जल गुणवत्ता और निगरानी जानकारी के साथ देखना आवश्यक है। जल गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के संकेतक बताते हैं कि लगभग 2,870 प्रयोगशालाएं और 61.66 लाख परीक्षण किए गए नमूने हैं, जो गुणवत्ता आश्वासन में गहन संस्थागत निवेश का संकेत देते हैं।

हालांकि, दूषित नमूने और आर्सेनिक/फ्लोराइड वाले क्षेत्र अभी भी मौजूद हैं, जो यह साबित करता है कि नल तक पहुंच का मतलब उपयोग के बिंदु पर सुरक्षित पानी नहीं है। परिचालन विशेषताएं, जैसे आपूर्ति की निरंतरता, दबाव, विश्वसनीयता और सुधारात्मक रखरखाव, जल जीवन मिशन के तहत मापी नहीं जा सकती हैं और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

## 19.5 वैदिक सिद्धांतों के साथ व्याख्यात्मक संबंध

### 19.5.1 आपः सूक्त और जल को पवित्र कर्तव्य के रूप में

ऋग्वेद 10.9, जिसे आपः सूक्त के नाम से जाना जाता है, पानी की अद्भुत और जीवन देने वाली शक्ति की बात करता है।इसमें "आपो अमृता धाता" का जाप किया गया है, जिसका अर्थ है कि पानी हमें अमर बनाता है।इस आपः सूक्त में, पानी को कोई आम चीज़ नहीं माना जाता है, बल्कि यह सबसे पवित्र चीज़ है जिसका सम्मान, देखभाल और समान वितरण किया जाना चाहिए।

सरकारी भाषा में अनुवादित इसका तात्पर्य है कि जल ,संरक्षण को शामिल करना चाहिए:

- समग्र प्रावधानजिसमें जल की पहुंच और गुणवत्ता शामिल है ,
- नैतिक जिम्मेदारीसे अधिक कुछ है जो केवल अवसंरचना ,
- समान वितरणताकि कोई भी व्यक्ति जल से वंचित न हो ,
- संरक्षकताजिसमें जल की देखभाल और प्रदूषण का उत्तर देना शामिल है ,

जल जीवन मिशन के तहत घरों में पानी के नल के कनेक्शन बढ़ाने का काम सही दिशा में हो रहा है। 2019 में लगभग 17% घरों में ही यह कनेक्शन थे, लेकिन 2024-25 तक यह संख्या 80% से ज्यादा होने का अनुमान है। यह एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि इससे लोगों को घरों में ही स्वच्छ पानी मिलने की सुविधा मिलेगी।तेलंगाना,

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

गोवा, पंजाब, गुजरात और बिहार जैसे राज्यों में इस योजना के तहत काफी काम हुआ है। इन राज्यों में अधिकांश घरों में अब पानी के कनेक्शन हो गए हैं। यह इस बात का संकेत है कि हम इस लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं जहां सभी को पर्याप्त और स्वच्छ पानी मिल सके।लेकिन राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तर प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में अभी भी बहुत काम करना बाकी है। इन राज्यों में केवल 20-25% घरों में ही पानी के कनेक्शन हैं। यह एक बड़ी चुनौती है और इन राज्यों में इस योजना को और तेजी से लागू करने की जरूरत है।हर किसी को पानी का अधिकार है और इसे किसी एक व्यक्ति या समूह के लिए नहीं रखा जा सकता। यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम इस लक्ष्य को हासिल करें और सभी को स्वच्छ पानी मुहैया कराएं।

### 19.5.2जल गुणवत्तापहुंच से परे शुद्धता :

पानी तक पहुंच होना काफी नहीं है; हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वह साफ हो। वैदिक विचारधारा में कहा गया है कि पानी को साफ और पौष्टिक बनाए रखना बहुत जरूरी है। जल जीवन मिशन के तहत, जल परीक्षण के लिए कई सुविधाएं स्थापित की गई हैं - 2,870 से अधिक प्रयोगशालाएं, लाखों प्रशिक्षित कर्मचारी और करोड़ों नमूने जांचे गए हैं।

यह दिलचस्प है कि जल स्रोतों में अभी भी प्रदूषण है, और जहरीले क्षेत्रों में - 316 आर्सेनिक और 265 फ्लोराइड से प्रभावित जगहें बनी हुई हैं। हालांकि, पहले की तुलना में यह संख्या कम हुई है। इससे जल शुद्धिकरण की आवश्यकता का संकेत मिलता है, जिसमें विभिन्न तरीकों से जल को शुद्ध किया जाता है।

वैदिक दृष्टिकोण से, जल की शुद्धता बहुत महत्वपूर्ण है। जल स्रोतों की सफाई, अशुद्धियों को ढूंढना और उन्हें हटाने की कोशिश करना सभी अनुष्ठानों और नैतिक शुद्धिकरण समारोहों से जुड़ा हुआ है। यह "आंतरिक शुद्धिकरण" का एक उदाहरण है, जो योग दर्शन में शौच (स्वच्छता) के समान है।

### 19.5.3निगरानी और तीव्र प्रतिक्रियाधर्मिक संरक्षकता :

जबकि पहुंच और गुणवत्ता एक बेसलाइन निर्धारित करती हैं, शासन को भी सतर्कता और तेजी से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है - गुण जो वैदिक संरक्षकता प्रतिमानों के स्वाभाविक हैं। यहां, इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम प्रणाली अपनी व्यापक कवरेज के साथ, वह निरीक्षण उपकरण प्रदान करती है ताकि नीति-निर्माता जलजनित प्रकोपों पर तेजी से प्रतिक्रिया कर सकें। यह प्रणाली निगरानी, गुणवत्ता, और वितरण को एक साथ जोड़ती है, जो एक प्रबंधन रणनीति दिखाती है जो स्थिरता और उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देती है - वैदिक धर्मिक जिम्मेदारी का एक आधुनिक जोड़: जब नुकसान होता है तो कार्य करना।

### 19.5.4डेटा की सटीकता और नैतिक नेतृत्व

एक संसदीय लेखा परीक्षा ने हाल ही में आईएमआईएस डेटा की गुणवत्ता के साथ समस्याओं की ओर इशारा किया। इससे यह सवाल उठता है कि क्या जो प्रगति बताई गई है वह वास्तव में हासिल हुई है। यह ईमानदारी और पारदर्शिता की आवश्यकता पर बल देता है, जो वैदिक प्रबंधन सिद्धांतों के अनुरूप है। इन सिद्धांतों के

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

अनुसार, शासकों और प्रशासकों को ईमानदार ट्रस्टी होना चाहिए। झूठे दावे करना एक पवित्र विश्वास का उल्लंघन है।मध्य प्रदेश जल दर्पण पोर्टल एक अच्छा उदाहरण है। यह पोर्टल वास्तविक समय में निगरानी करने और लोगों की शिकायतों को अनुमति देता है। यह वास्तविक समय में जवाबदेह होने की दिशा में एक नई शुरुआत है।

### 19.5.5स्थानीय नेतृत्वउचित प्रबंधन के नेतृत्व का उदाहरण :

मैसूरु का उदाहरण एक अच्छा उदाहरण है, जहां प्रबंधन ने समझदारी से धन का उपयोग किया और एक चरणबद्ध योजना बनाकर 2028 तक सभी को कवर करने का लक्ष्य रखा। यह उदाहरण स्थानीय स्तर पर मितव्ययिता और जिम्मेदारी का एक अच्छा प्रदर्शन है, जो हमारी पुरानी परंपरा में वर्णित स्थानीय नेताओं की भूमिका की याद दिलाता है।

### 19.5.6सारांश □□□ :मेट्रिक्स को वैदिक प्रबंधन सिद्धांतों के साथ मानचित्रण

| मीट्रिक / तंत्र JJM | वैदिक सिद्धांत (आपः सूक्त, नैतिक प्रबंधन) |
|---|---|
| कवरेज FHTC | जल का समतामूलक प्रावधानसाधन के रूप में-जल सामान्य जीवन ; |
| जल गुणवत्ता परीक्षण और प्रयोगशालाएं | शुद्धीकरण ;(शौच)जल को स्वच्छ और परीक्षित करने का कर्तव्य |
| संदूषित बस्तियों का डेटा | अशुद्धता की पहचानसफाई की प्रक्रिया ; |
| निगरानी (IDSP) | सतर्कतास्वास्थ्य जोखिम के प्रति प्रतिक्रिया का कर्तव्य ; |
| वास्तविक समय निगरानी और प्रतिक्रिया | पारदर्शितानैतिक नेतृत्व; कर्तव्य ; |
| डेटा गुणवत्ता निरीक्षण | सत्यता ;(सत्य)संस्थानों में विश्वास की रक्षा |
| स्थानीय कार्यान्वयन दृढ़ता | तृणमूल स्तर से धर्मआधारित संरक्षकता; नेतृत्व का उदाहरण- |

टेबल 3: जेजेएम तंत्रों का वैदिक प्रबंधन सिद्धांतों के साथ मानचित्रण

### 19.5.7प्रबंधन और विकास सिद्धांतों में वैदिक शास्त्रों की वर्तमान युग में प्रयोज्यता" से संबंध

एक आधुनिक दृष्टिकोण है जो प्राचीन वैदिक प्रबंधन दर्शन से प्रेरित है। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं □□□

- समग्र एकीकरण: यह दृष्टिकोण बुनियादी ढांचेगुणवत्ता, निगरानी और लोगों की भागीदारी को एक साथ , स्टम एक पवित्र और संतुलित ब्रह्मांड की तरह काम करता है।जोड़ता है, जैसे कि एक पूरा सि
- नैतिक नेतृत्व: यह दृष्टिकोण ईमानदारी और जिम्मेदारी पर जोर देता हैजो सत्य और कर्तव्य के , मूल्यों को दर्शाता है।
- समानता और न्याय: यह दृष्टिकोण गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद करने पर केंद्रित हैके जो सभी , कल्याण पर वैदिक जोर को प्रदर्शित करता है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

- स्थानीय सशक्तीकरण: स्थानीय महिलाओं को सशक्त बनाने और समुदायों को संगठित करने का यह दृष्टिकोण पुराने ग्राम सभा प्रणालियों से प्रेरित है।
- लचीला प्रतिक्रिया लूप: यह दृष्टिकोण समस्याओं की पहचान करने और उन्हें सुधारने के लिए एक लचीले और प्रभावी तरीके का उपयोग करता हैजैसे कि वैदिक अनुष्ठानों में असंतुलन को महसूस करना और , सुधारना।

## 19.6 चुनौतियां और सिफारिशें

मजबूत संरचना और प्रगति के बावजूद कई चुनौतियाँ बनी रहती हैं:

### 19.6.1 डेटा अखंडता की चिंताएं

संसद में कुछ लोगों ने आईएमआईएस डेटा की गुणवत्ता पर संदेह जताया हैजिससे इसकी विश्वसनीयता प्रभावित , होती है।

सिफारिश: तीसरे पक्ष की ऑडिट या कम्युनिटी सर्टिफिकेशन जैसी संस्थागत व्यवस्था लागू करेंजैसे कि वैदिक , मध्य प्रदेश में जल सभा शासन में। वास्तविक समय डैशबोर्ड का देशव्यापी विस्तार सुझाया जाता है, जैसे कि दर्पण।

### 19.6.2 असमान कवरेज और समानता अंतराल

Corrected text:

"राजस्थान, उत्तर प्रदेश, झारखंड और छत्तीसगढ़ इस दृष्टि से काफी पीछे हैं।"

सिफारिश: लक्षित संसाधन आवंटनस ,्थानीय नेतृत्व क्षमता निर्माण और प्रदर्शनआधारित प्रोत्साहन लागू करें।-

### 19.6.3 जल गुणवत्ता कमजोरियां

कई जगहों पर अभी भी दूषित जल के नमूने और प्रभावित बस्तियां हैं।

सिफारिश :सीडब्ल्यूपीपी में निवेश करें, मांग-आधारित परीक्षण उपलब्ध कराएँ तथा सामुदायिक जागरूकता बढ़ाएँ।

### 19.6.4 खराब निगरानी संबंध

जेजेएम और आईडीएसपी संचालनात्मक रूप से जुड़े नहीं हैं।

सिफारिशजिला स्तर पर डैशबोर्ड बनाएं जो जल गुणवत्ता उल्लंघनों और रोग प्रकोपों को ओवरले करें। :

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

### 19.6.5स्थानीय क्षमता और स्वामित्व

मैसूरु में सफलता स्थानीय क्षमता के अनुशासन के प्रभाव को दर्शाती हैलेकिन कई जिलों में इसकी कमी है। ,
सिफारिश: जिला प्रशासकों के बीच सहकर्मी शिक्षण मंचों को बढ़ावा दें और प्रशिक्षण में वैदिक नैतिक मूल्यों को एकीकृत करें।

### 19.6.6अवसंरचना से परे स्थिरता

जल अवसंरचना को हर समय बनाए रखा और देखभाल की जानी चाहिए।
सिफारिश: ग्राम जल समितियां स्थापित करें जिनमें स्पष्ट भूमिकाएंबजट और जिम्मेदारियां हों। ,

## 19.7 निष्कर्ष

भारत का जल जीवन मिशन एक बहुत बड़ा प्रयास है जो सार्वजनिक स्वास्थ्य की एक आधुनिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छ और सुरक्षित पानी की आपूर्ति करना है। इस मिशन ने बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की हैं जैसे कि लगभग 81% ,घरों में नल जल पहुंचाना और जल परीक्षण की क्षमता बढ़ाना।
जल जीवन मिशन के पीछे का विचार यह है कि जल को पवित्र और जीवनसमर्थक माना जाता है। यह मिशन - यह भी दिखाता है कि पुरानी वैदिक शिक्षाओं को आधुनिक प्रबंधन में कैसे अनुवादित किया जा सकता है। इस मिशन के डिजाइन में नैतिक पहुंचशुद्धता, सतर्कता, और अखंडता जैसे मूल्य शामिल हैं। ,
जल जीवन मिशन को और भी बेहतर बनाने के लिएयह जरूरी है कि हम डेटा को प्रामाणिक बनाएं, समानता , की कमी को पाटेंससे हम प्रतिक्रिया तंत्र को एकीकृत करें, और स्थानीय संरक्षकों को मजबूत करें। इ-निगरानी , जल के वैदिक दृष्टिकोण को अधिक पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकते हैं।"भविष्य में जल जीवन मिशन को अवसंरचनात्मक लक्ष्यों से आगे बढ़कर सेवा-आधारित मापदंडों को अपनाना चाहिए। जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन तथा स्रोत स्थिरता पर वैदिक दृष्टिकोण को एकीकृत करके हम वास्तव में "आपः अमृतम्" (जल अमृत है) के आदर्श को साकार कर सकते हैं।"
यह शोध दिखाता है कि पुराने ज्ञान और आज के डेटा आधारित शासन के बीच बातचीत संभव है और सतत, समानता आधारित और नैतिक विकास के लिए ज़रूरी है।जल जीवन मिशन अपनी सफलता और चुनौतियों के साथ, वैदिक शास्त्रों में दिए गए समय से परे प्रबंधन के नियमों की आज भी प्रासंगिकता का एक अच्छा उदाहरण है।

## 19.8 संदर्भ सूची

[1] Temple Purohit. (2024). *Apah Suktam (Rig Veda 10.9): In Sanskrit with Meaning and Video*. https://www.templepurohit.com/mantras-slokas-stotras/vedic-suktas/apah-suktam-rig-veda-10-9/

[2] Hindu Scriptures. (2019). *Apah Suktam - Rig Veda 10.9*. https://hinduscriptures.com/apah-suktam-rig-veda-10-9/

[3] Moolatattva. (2025). *Water in the Rigveda: Its Symbolism and Significance*. https://www.moolatattva.com/blog-posts/water-apah-in-the-rigveda-symbolism-and-significance

[4] Dharma Wiki. (2025). *Water Systems*. https://dharmawiki.org/index.php/Water_Systems

[5] Hindu Temple Talk. (2024, June 25). *Apah Suktam: The Vedic Hymn to Water*. https://hindutempletalk.org/2024/06/25/apah-suktam-the-vedic-hymn-to-water/

[6] UGTA Bharat. (2019). *Some Ways of Water Conservation and Management in Vedic Literature*. https://www.ugtabharat.com/1300/

[7] Press Information Bureau, Government of India. (2025, March 16). *Current Status of Jal Jeevan Mission*. https://www.pib.gov.in/PressReleaseShare.aspx?PRID=2114280

[8] Press Information Bureau, Government of India. (2025, July 30). *National Framework for Real-time Water Quality Index*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2150702

[9] Drishti IAS. (2025, August 20). *Jal Jeevan Mission*. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/jal-jeevan-mission-26

[10] India Water Portal. (2025, February 4). *Budget 2025-26: Jump in Funding for Jal Jeevan Mission*. https://www.indiawaterportal.org/governance-and-policy/budget-2025-26-big-jump-in-funding-for-jal-jeevan-mission

[11] Innovate India. (2024, July 28). *Jal Jeevan Mission*. https://innovateindia.mygov.in/hi/jal-jeevan-mission/

[12] Press Information Bureau, Government of India. (2024, March 23). *JJM: State/UT-wise Status of Tap Water Connections in Rural Households*. https://www.pib.gov.in/PressReleaseShare.aspx

[13] Press Information Bureau, Government of India. (2025, August 31). *Jal Jeevan Mission: Key Points*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2182569

[14] JJM-WQMIS. (2026, January 13). *Status of Testing of Drinking Water Samples in 2025-26*. https://ejalshakti.gov.in/WQMIS

[15] Press Information Bureau, Government of India. (2025, July 30). *National Framework for Real-time Water Quality Index*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2150702

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

[16] Wikipedia. (2025). *Integrated Disease Surveillance Programme*. https://en.wikipedia.org/wiki/Integrated_Disease_Surveillance_Programme

[17] The Times of India. (2025). *Panel Flags Concerns over JJM Data Quality; MPs Jal Darpan Portal; Mysuru District Progress*. https://timesofindia.indiatimes.com/

[18] Orissa Diary. (2024, July). *Jal Jeevan Mission Achieves 77.81% Tap Water Coverage for Rural Households*. https://orissadiary.com/

[19] The Hindu. (2025). *State-wise Jal Jeevan Mission Coverage*. https://www.thehindu.com/

[20] Press Information Bureau, Government of India. (2024, January 29). *Monitoring Water Quality*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2002796

[21] Press Information Bureau, Government of India. (2025, August 13). *Water Quality Monitoring System*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2157676

[22] India Water Portal. (2010). *Monitoring Water Quality*. https://hindi.indiawaterportal.org/articles/naigaraanai-gaunavatataa-kai

[23] Vajiram & Ravi. (2026, February 6). *Jal Jeevan Mission: Coverage Versus Functionality in Water Supply*. https://vajiramandravi.com/current-affairs/jal-jeevan-mission-coverage/

[24] Jiva Water. (2024, October 2). *The Sacred Flow: Exploring Water Significance through Apah Suktam in Vedic Wisdom*. https://jivawater.in/blogs/blogs/the-sacred-flow-exploring-the-significance-of-water-through-apah-suktam-in-vedic-wisdom

[25] India Water Portal. (2010). *Water Suktas in Vedas*. https://hindi.indiawaterportal.org/books/vaedaon-maen-jala-sauukata

[26] Joshi, V. K. *Vedic View of Water Management*. IJHSSI. http://www.ijhssi.org/papers/vol8(1)/Version-2/P08010297100.pdf

[27] MSRVVP. *Water Management in Vedas*. https://msrvvp.ac.in/ved-vidya/24/18_Hindi_Kripashankar%20Sharma_24.pdf

[28] Mahavir Mandir Patna. (2021). *Water Discussion in Vedic Literature*. https://mahavirmandirpatna.org/dharmayan/

[29] Vision IAS. (2025, February 2). *Central Budget 2025-26: Extension of Jal Jeevan Mission till 2028*. https://visionias.in/current-affairs/hi/news-today/2025-02-03/economy/

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

[30] Kumauni.in. (2023, June 19). *Vedic Water Science in Kumaon*. https://www.kumauni.in/2023/06/vaidikwaterscienceinkumaon.html

[31] IJHSSI. *Importance of Water Resources in Vedas and Their Conservation*. http://www.ijhssi.org/papers/vol10(4)/Ser-2/J1004026063.pdf

[32] ResGov. (2025). *Trends in Finances for Jal Jeevan Mission*. http://resgov.org/contents/reports/JJM-Budget-Insights-2025.pdf

[33] JJM-WQMIS Portal. (2024, December 31). *Status of Testing of Drinking Water Samples in 2025-26*. https://ejalshakti.gov.in/WQMIS/Main/Index

[34] Rig Veda Online. *The Rig Veda, 10.9*. https://rigveda-online.github.io/10/9.html

# 20 वसुधैव कुटुम्बकम्: अद्वैत एकात्मता की व्यावहारिक दृष्टि

शैलेंद्र मिश्र, मनीष मिश्रा
सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय

## 20.1 सारांश

वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत हमारी भारतीय सनातन संस्कृति का मूलभूत दर्शन है, जो अद्वैत वेदांत की एकात्मता पर आधारित है। यह शोध पत्र आचार्य शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के माध्यम से विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की व्यावहारिक दृष्टि का विश्लेषण करता है।

वर्तमान समय में हम कई वैश्विक संकटों का सामना कर रहे हैं, जैसे कि कोविड-19 महामारी, पारिवारिक विघटन और पश्चिमी व्यक्तिवाद। ऐसे में यह दर्शन हमें शांति, सह-अस्तित्व और पारमार्थिक जीवन का मार्ग दिखाता है। पत्र में वेदांत की तीन सत्ताओं - व्यवहारिक, प्रातिभाषिक, पारमार्थिक का वर्णन किया गया है, जो हमें भारतीय संस्कृति की विश्वव्यापी प्रासंगिकता को समझने में मदद करती हैं।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

इस शोध पत्र में लगभग 4000 शब्द हैं, जो वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांत को विस्तार से समझाने का प्रयास करते हैं। यह पत्र हमें यह याद दिलाता है कि हम सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं और हमें एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व और शांति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

## 20.2परिचय

भारतीय दर्शन की प्राचीन परंपरा में वसुधैव कुटुम्बकम्' एक महत्वपूर्ण विचार है जो दुनिया को एक ' परिवार के रूप मेंदेखने का संदेश देता है। यह विचार महोपनिषद से लिया गया है और अद्वैत वेदांत के मूल सिद्धांत हमें यह समझने में मदद करता है कि हम सभी एक अहं ब्रह्मास्मि' पर आधारित है, जो' हैं।

आज के समय मेंजब वैश्वीकरण, पर्यावरण संकट और सांस्कृतिक संघर्ष अपने चरम पर हैं, यह , दर्शन हमें एकता और मानवता के महत्व को समझने में मदद करता है। आचार्य शंकराचार्य ने अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य में एकत्व की व्याख्या की हैजहाँ उन्होंने दुनिया को ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना है। यह लेख , हरिद्वार में दिए गए एक व्याख्यान पर आधारित है और वेदांत की दृष्टि से विश्व एकात्मता का विश्लेषण करता है।

हमारे उद्देश्य हैं:

1. अद्वैत दर्शन की व्यावहारिकता को समझाना,
2. पश्चिमी व्यक्तिवाद से इसकी तुलना करना,
3. कोविड काल में इसकी प्रासंगिकता को देखना।

हमारी शोध पद्धति गुणात्मक हैजिसमें प्राचीन ग्रंथों का विश्लेषण और वर् ,तमान घटनाओं का समावेश है।

## 20.3मुख्य भाग

हम सब एक हैं और इस जगत में जो कुछ भी है, वह भी एक ही है। उसके रूप अलग हैं, लेकिन उन सभी रूपों में एक ही चीज़ अभिव्यक्त होती है। इस जगत की विविधता में, विभिन्नताओं में बहुरूपता और विभिन्नताओं में एक ही ब्रह्म विस्तृत है। वह हर जगह है। वह सबमें समाहित है।

वेदांत के अनुसार, आत्मा और परमसत्ता एक हैं। यह परमसत्ता अनंत है, अव्यक्त है, अगोचर है, नित्य है, शाश्वत है, और हमेशा नई है। यह आनंदप्रद है। इस सर्वोच्च सत्ता की तीन सत्ताएँ हैं: व्यवहारिक सत्ता, प्रातिभाषिक सत्ता, और पारमार्थिक सत्ता।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

अगर हमें तत्व का बोध हो गया है, तो संदेह कहाँ रहता है? जिसने उस एक परमात्मा को जान लिया है, उसकी दृष्टि में इस जगत की सत्ता कहाँ रहती है? फिर संदेह भी कहाँ है? लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से जगत है, और उसमें हर जगह एक ही चीज़ समाई हुई है। यह एक ही ब्रह्म की अभिव्यक्ति है 'संसार'।

भारत की सनातन संस्कृति में पूरे विश्व को एक परिवार माना गया है। न केवल परिवार, बल्कि उस परिवार में न केवल मनुष्य हैं, बल्कि पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल, वायु, निहारिका, और नक्षत्र भी परमात्मा के रूप हैं। वे उसी से अभिव्यक्त हैं और हमारे परिवार का हिस्सा हैं। यह भारतीय संस्कृति की विशालता है, हृदय की विशालता है।इस संस्कृति में, जितने भी प्राणी इस धरती पर हैं, वे सब अपने हैं। इस जगत में जो विविधता है, उसमें उनके रूप अलग-अलग हैं। लेकिन ईश्वर के जितने भी रूप हैं, वे अलग-अलग होने पर भी, उनमें एक ही नारायण व्याप्त है।ऋषियों ने कहा है कि "तत्वमसि", "प्रज्ञानं ब्रह्म", "अयं आत्मा ब्रह्म", और "अहं ब्रह्मास्मि"। इसका अर्थ है कि और कोई नहीं है जो अपने से भिन्न हो। और अगर कुछ अलग दिखाई देता है, तो वह भी अपना ही है।शास्त्र कहते हैं कि जैसा हम स्वयं को मानते हैं, वैसा ही दूसरों को मानें। दूसरा, स्वयं से भिन्न नहीं है। और हमें जो अच्छा नहीं लगता है, वह दूसरों के साथ न करें, क्योंकि जो अन्य भी है, वह अपना ही है, क्योंकि वह स्वयं का ही विस्तार है। यहाँ अन्य कोई नहीं है।

पूरे विश्व को परिवार मानने वाली भारत की यह अद्भुत संस्कृति पूरे संसार को अपना मानती है। ऐसा कहकर, हमने गीत गाए हैं, "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु"। हमने ऐसे ही गीत गाए हैं कि विश्व का कल्याण हो, हमने ऐसे ही गीत गाए हैं कि कोई दूजा नहीं है, अपने ही सब हैं। इससे बड़ा और अधिक उद्घोष क्या होगा हमारी संस्कृति का? जिसमें पूरी धरा को माँ मानकर, यह धरती मेरी माँ है, ऐसा मानकर इसका आदर किया जाए। और जल, अग्नि, वायु, निहारिका, और नक्षत्र सब में परमात्मा है, और वह एक ही जो सर्वत्र व्यापक है, उसका आदर हो। इसलिए हमने अग्नि, जल, वायु को देवता कहा है। हमने अतिथि को भी नारायण मानकर अर्चना की है। इसी प्रकार से हमारे उपदेश भी हैं। ऋषियों के इसी प्रकार से शिक्षाएँ और आदेश हैं। उन्होंने हमें इसी तरह से धन रूपी संस्कार दिए हैं।

## 20.4एकात्मता का वैशिष्ट्य और आधुनिक चुनौतियाँ

अतिथि को ब्रह्म मानना और उनका सम्मान करना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब हम अपनों के साथ होते हैंके अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और उनका सम्मान करना तो हमें उन , चाहिए। हमें उनकीनिजतास्वाभिमान, गौरव और व्यक्तिकता की रक्षा करनी चाहिए। हमें संवेदनशील , और सहज रहना चाहिए, ताकि हम दूसरों के हिस्से न छीनें और उनके साथ न्याय करें।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

हमारे शास्त्र कहते हैं कि हमें दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ एकता की भावना रखनी चाहिए। हमें पूरी प्रकृति के साथ आत्मीयता रखनी चाहिए और उनके साथ एकता की भावना रखनी चाहिए। हमें उनके प्रति जागरूक रहना चाहिए और उनके अधिकारों का सम्मान करना चाहिए।

हमारी संस्कृति में एक सुंदर बात कही गई है कि विश्व एक परिवार है। हमें विश्व के मंगल और शांति के लिए काम करना चाहिए और लोक कल्याण के लिए प्रयास करना चाहिए। हमारी संस्कृति ने विश्व को एक परिवार माना है और उसके लिए हमेशा झुकी है। हमें यज्ञ करना चाहिएपरिजन्य को -पर , और परमात्मा को सर्वत्र अभिव्यक्त मानना चाहिए। बुलाकर आदर करना चाहिए

आजकल परिवार टूट रहे हैं और एकल परिवार आ रहे हैं। हमारा देश भारत भी पश्चिम की सभ्यता और संस्कृति की नकल कर रहा है, जो हमारे लिए अच्छा नहीं है। अगर हम अपने आदर्शों को नहीं अपनाएंगे और अपने मूल्यों और परंपराओं से दूर हो जाएंगे, तो परिवार बिखर जाएगा। पश्चिमी देशों में यही हो रहा है, जहां परिवार की संस्था खो गई है और लोग अपने रिश्तों को नहीं समझते। वहां भाई-बहन, परिवार के सदस्य नहीं हैं, और परंपराएं भी नहीं बची हैं। वे सिर्फ वर्तमान को जी रहे हैं और सुखी जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे देश के कुछ लोग भी इसी तरह का जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, जो बिल्कुल ठीक नहीं है।परिवार एक बड़ी संस्था है और हमें पूरे विश्व को कुटुम्ब मानकर उसके लिए जीना चाहिए। हमें उसके प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और उसे अपनी सम्पदा मानना चाहिए। हमें उसे अपनी निधि मानना चाहिए और उसे अपने से भिन्न नहीं मानना चाहिए।

## 20.5वेदांत की तीन सत्ताएँ और प्रकृति सह-अस्तित्व

आज की दुनिया बहुत बदल गई है। लोग बिना कुछ किए, बिना किसी योग्यता के ही सब कुछ पाना चाहते हैं। आजकल, लोगों की सोच पर नौकरी, सम्मान, पहचान, विज्ञापन, और लालच का बहुत प्रभाव पड़ता है। पहले ऐसा नहीं था।

यहाँ तक कि लोगों की सोच पर निरंतर दबाव डाला जा रहा है कि वे प्रतिष्ठित बनें, प्रसिद्ध हों, और शीर्ष पर पहुँचें। बिना कुछ किए ये सब हासिल करना चाहते हैं और वे इसका विरोध नहीं करना चाहते।

हमारी संस्कृति सिखाती है कि सभी के साथ मिलकर रहना चाहिए, लोगों को अलग करके नहीं, बल्कि सेवा और अच्छे कामों के लिए जीना चाहिए। जो कुछ तुम देते हो, वह तुम्हें वापस मिलता है। इसलिए, जो सबसे बड़ा और अच्छा है, वह भी अच्छे कामों में लगा रहता है।

वेदांत के अनुसार, भगवान की तीन शक्तियां हैं - व्यवहारिक, प्रातिभाषिक, और पारमार्थिक। अगर प्रकृति के माध्यम से परमात्मा का कोई व्यवहार है, जैसे अग्नि, जल, और वायु के द्वारा, तो वह परमार्थ ही

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

है। भगवान पवन के रूप में परिजनों के लिए है, प्राण और अन्न की पाचकता के रूप में है, आकाश की व्यापकता के रूप में है, धरा की गंध और जल की आर्द्रता के रूप में है, अग्नि की दाहकता के रूप में है - यह सभी पारमार्थिक है।

एक वृक्ष अपने जीवन में बहुत कुछ देता है, वह सबको अपना मानता है, किसी को पराया नहीं मानता, सिर्फ बांटता है, सबके लिए खिलता और शोभित होता है। वह अपनी प्राण सत्ता से परिजन्य को आकर्षित करता है, जैसे वह बादलों को बुलाता है, जिससे बादल धरा पर स्वयं को निचोड़ देना चाहते हैं। वह अपना सर्वस्व देता है, पूरा संसार उसका परिवार है - ऐसा मानकर वृक्ष जीता है और मर जाता है। वह सबके लिए जीवन जी रहा है।

हमारी संस्कृति जीवन सिखाती है, और यह दृष्टि एकात्मता के रूप में भारत ने दी है। सह-अस्तित्व की दृष्टि भारत ने दी है, जो भारत का वैशिष्ट्य है, भारत के अध्यात्म और वेदांत का वैशिष्ट्य है। भगवान भाष्यकार ने एकात्म दृष्टि दी है - पूरा विश्व एक है। इस एकता से फिर दृष्टि, विषमताएं, संघर्ष, और दमन-अत्याचार, अनीति, शोषण, आपाधापी, नरसंहार नहीं रहेगा।

अगर पूरे संसार को एकता देनी है, पूरे संसार की शांति और मंगल के समाधान की दिशा में सूत्र खोजना है, तो यह भौगोलिक दृष्टि से नहीं हो सकता, किसी उत्पाद की दृष्टि से नहीं हो सकता। हमें इसके लिए एकता के सूत्र में पिरोना होगा। ध्यान रखिए, यह एकमात्र एकात्म दर्शन है, जिससे पूरे संसार को शांति और समाधान दिया जा सकता है।

## 20.6कोविड संकट में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

कोरोनाकाल में पूरे संसार में एक अजीब सी चुप्पी छा गई और लोगों के दिलों में भय फैल गया। पश्चिमी देशों में अवसाद ने घर कर लिया है, और लोगों की आजीविका के सामने बड़े संकट खड़े हो गए हैं। लोग अपनी चेतना पर एक कुण्ठता महसूस कर रहे हैं, क्योंकि वहाँ विचारों की कमी है। केवल द्रव्य, पदार्थ, और वस्तुओं के अलावा कोई अन्य विचार नहीं हैं।

लेकिन हम भारत के लोग भाग्यशाली हैं क्योंकि हमारे पास आत्मविचार है, अध्यात्म विचार है। हम केवल शरीर को ही जीवन नहीं मानते, बल्कि इससे परे भी कुछ है। मैं केवल हाड़-माँस नहीं हूँ, मैं केवल श्वास नहीं हूँ। हमारी संस्कृति कहती है कि मैं विचारक नहीं हूँ, मैं केवल शाश्वत सत्य हूँ, मैं सदैव हूँ, मैं अजन्मा हूँ।

मृत व्यक्ति में और समाधि में बड़ा अंतर दिखाई नहीं देता, लेकिन जो व्यक्ति गहरी समाधि में बैठा है वह कई बार केवल मृत व्यक्ति जैसा ही दिखाई देता है। लेकिन जो मृतक है उसके पास कोई सभावना

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

नहीं है, उसमें प्राणसत्ता सो गई है और वह निष्क्रिय है और अभिव्यक्त नहीं है। लेकिन समाधि में अभिव्यक्ति रहती है, वहाँ जीवन रहता है और आगे के लिए भी दृष्टि रहती है।

भले ही साँसें ठहर सी गई हों, लेकिन समाधि में जो आत्म-विचार है अपने होने का जो अनुभव है जो स्वयं के होने का अर्थ प्रकट करता है। वह अपनी समझ है और मैं उसी से हूँ। यह दिव्य दृष्टि है, यही मङ्गल्य दृष्टि है, और यह दृष्टि भारत ने दी है।

आज संसार के सभी देशों में भारत के लिए आह्वान है औषधियों का, और यहाँ से औषधियाँ जा रही हैं। आयुर्वेद ने किस तरह से चमत्कार किया है पूरे संसार में। मैं करीब 35-40 साल पहले अमेरिका गया था, तब वहाँ कोई हल्दी जानता भी नहीं था। आज किस तरह से वहाँ हल्दी का काढ़ा और तुलसी की चाय पी जा रही है, और उनकी मनोदशा को तुलसी ने किस तरह से संभाल रखा है।

भारत की औषधियाँ, जीवन जीने का ढंग, अब वे स्वीकार कर रहे हैं। भारत का योग पूरे विश्व को आकर्षित कर रहा है। वैसे ही भारत का यह आध्यात्मिक विचार, यह आत्म विचार, मैं नित्य शाश्वत सनातन, अजन्मा हूँ, यह जो दृष्टि है। यह पूरे संसार में पहुँचती है तो भय का नाश होगा और असुरक्षा की भावना दूर होगी।

पूरे संसार में जिस तरह से असुरक्षा की भावना है, जिस ढंग से भय और अवसाद है, उसके लिए एकमात्र औषधि विचार हैं और वैसा ही भगवान शंकराचार्य कहते हैं, 'विचार औषधि है, और संसार भव-रोग है, तब इसकी औषधि क्या है। तब इस विचार ही इसकी औषधि है।'

भारत ने एक बड़ा विचार दिया है, आत्मा का विचार, नित्यता का विचार, सनातनता का विचार, काल के मुख में हम ग्रास बनकर बैठे हैं। यहाँ सब कुछ नश्वर है, जो परिवर्तन में रोज बदलता दिखाई देता है। लेकिन यह सत्य मेरा नहीं है, यह जो दृष्टि भारत की है। इसी दृष्टि ने पूरे विश्व को पूरा परिवार माना है, और जब व्यक्ति के भीतर आत्मीयता पैदा होती है तब भीतर एकात्मता का भाव पैदा होता है। तब वह भाव प्रियता, शुभता को भी पैदा करते हैं, उस आत्मीयता में स्नेह भी पैदा होता है, और दूसरों के अधिकारों के प्रति भी व्यक्ति सावधान होता है। फिर दुश्मनी कहाँ रहती है। हमारे यहाँ तो कुछ ऐसे ही उपदेश हैं, हममें मैत्री, करुणा का भाव है, ये भावनाएँ इस धरती पर भारत ने सिखाई हैं।

पूरे विश्व को अपना मानने की दृष्टि में, फिर भले ही जातियाँ, उपजातियाँ, उपासना की पद्धतियाँ हमारे आह्वान के ढंग अथवा हमारी अन्य मान्यताएँ अलग-अलग होंगी, अलग-अलग रहेंगी। पर जो एक्सक्लूसिवनेस जो आई वो पदार्थ, वस्तुओं और धरती को लेकर आई।

मैं नाम नहीं लेना चाहता लोगों का, पर एक ऐसे आए जो कहते हैं कि हम एक्सक्लूसिव हैं, यह धरती हमारी है, हम ही श्रेष्ठ हैं। कुछ यूरोपीय, द्वितीय विश्व युद्ध की चर्चा करें तो देखिए किस तरह से वहाँ आपस में युद्ध हुआ। क्या हम अलग-अलग हैं?

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

विश्व में दीवार खड़ी हो गई थी, फिर परिवार का विचार आया वो दीवार टूटी और एक ही देश में दो से चार देश बन गए कि हम अलग रहेंगे। खान-पान की दृष्टि से, हम आहार की दृष्टि से थोड़े भिन्न हैं। हम कुछ अलग हैं। रूस के कितने टुकड़े हो गए। लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। भारत की चारों दिशाओं में कितनी ही विभिन्नताएँ, उत्तर भारत में बहुत से लोग हैं जो एक शब्द भी नहीं जानते तमिल का, बहुत से प्राणी हैं दक्षिण में जो पंजाबी नहीं जानते।

वो किसी अन्य राज्य की भाषा नहीं जानते, लेकिन हम सब एक हैं। हम अध्यात्म के कारण एक हैं। हम कई तरह से अलग हैं लेकिन हम एक हैं। चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग में हम एक हैं। सप्तपुरियों, महापुरुषों में एक हैं। आदि शंकराचार्य ने सारे मठों को एक कर दिया, उन्होंने दशनाम में बाँधकर सन्न्यासियों को एकत्व किया। जो एकता है हमारी उसी से हम आज एक हैं।

लगभग 47-48 सभ्यताओं ने जन्म लिया है इस धरती पर, लेकिन सब खो गई। मैं तिरस्कार नहीं कर रहा हूँ, लेकिन कहाँ है मिस्र का वैभव-साम्राज्य, यूनान का, रोम का? आज रोमन कहाँ हैं। वो सब मिट गए। हम हैं अभी, बात है कुछ ऐसी हस्ती, मिटती नहीं हमारी और यह केवल आध्यात्मिक विचारों के कारण हुआ है।

हम अपनी आत्मसम्पदा इस विभूति, वैभव ये... जो विचार वैभव है, जो वेद सम्पदा है इसके कारण हम यहाँ हैं। पूरे विश्व को हमने अपना माना और आज भी जो दर्द हमारे मन में सबके लिए है। वो जानते हैं लोग आज आयुर्वेद और योग सबके घर-घर की चीज बन गई है।

ऐसा कोई उन्माद समूह, समाज के लिए नहीं है। हमारी सभी वस्तुएँ सभी के लिए हैं। हमारी संस्कृति सर्व के लिए है जो सर्वत्र है। उसको अनुभव करने वाले हम भारतीय, भाषा, उपासना, प्रान्त की दृष्टि से भिन्न हैं, लेकिन जिस दिन हमें राष्ट्र का प्रेम जगता है आत्म ही है जो हमें राष्ट्रप्रेम जगाता है।

राष्ट्र को देवता माना है। वो राष्ट्र हमारा पुरुष है। धरती हमारी माँ है। तो यह भी विचार अध्यात्म ने ही दिया है। राष्ट्र को देवता मानने का विचार। मैं यह निवेदन करना चाहूँगा यहाँ के वनस्पति, कूप, खेत, खलिहान, बौंदियाँ सब एक हैं। ये विचार भारत का आध्यात्मिक विचार सर्वथा कल्याणकारी विचार है।

बहुत सी बातें कही जा सकती हैं इस अवसर पर, विश्व एक कुटुम्ब है। ऐसा चिंतन हमारे ऋषियों ने किया है। यह केवल संकल्पना नहीं है, यह कोई मिथ नहीं है। यह कोई 'इज्म' नहीं है जैसे सोशलिज्म हो, कम्युनिज्म हो 'इज्म' आए और गए। यह सत्यता है और सत्य नित्य, सनातन, शाश्वत है।

इसलिए उस सत्य के आश्रय में हमने पूरा संसार को अपना माना है। यहाँ के प्राणी, पंछी, परिंदे और प्रकृति, तत्वता, नियति, परमात्मा, प्रकृति सब एक हैं। उसी की व्यवहारिक या पारमार्थिक सत्ता हो वो ब्रह्म की विविध सत्ताएँ हैं। जो अपने में एक हैं और उनकी अनेकता दिखाई देती है।

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

मैं शंकर के इस मूर्तिमान भगवान शंकराचार्य की स्मृति में बैठूँ तो वो बड़ी ही कल्याणकारी स्मृति है। पतंजलि कहते हैं जब महापुरुषों का ध्यान किया जाता है, तब वो मङ्गल्य पैदा होता है। इसलिए आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्य प्रदेश के तत्वाधान में जो शंकर व्याख्यानमालाएँ चल रही हैं, उसमें मेरी ओर से वाणी सेवा थी। मैं अभिभूत हूँ।

ओंकारेश्वर में आचार्य शंकराचार्य के निमित्त वहाँ शोधकार्य होंगे। प्रतिमारूप में वो वहाँ रहकर विश्व का मङ्गल करने के लिए वहाँ से हमें प्रेरणा देंगे। मेरी ओर से न्यास को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। अपने शब्दों को विराम देना चाहूँगा।

## 20.7निष्कर्ष

वसुधैव कुटुम्बकम् अद्वैत वेदांत की एक व्यावहारिक व्याख्या है। यह पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है और का संदेश फैलाता है। coexistence

पश्चिमी व्यक्तिवाद और भौतिकवाद के विपरीत यह दर्शन आत्मा की अनंतता पर जोर देता है। यह , जैसे संकटों के दौरान शांति का आधार बन सकता है COVID।

भारतीय संस्कृति की यह विरासत वैश्विक शांति के लिए एकमात्र समग्र दर्शन प्रदान करती है। भविष्य में नीति निर्माण में इसे शामिल करना आवश्यक होगा।

## 20.8संदर्भ

महोपनिषद् (नहीं बताया गया). महोपनिषद् (6.71). गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित.

2. शंकराचार्य (8वीं शताब्दी, 2015 में पुनर्मुद्रित). ब्रह्मसूत्र भाष्य (टी.एस. नारायण शास्त्री द्वारा संपादित). मॉडर्न बुक सोसाइटी, दिल्ली से प्रकाशित.

3. बृहदारण्यक उपनिषद् (नहीं बताया गया). बृहदारण्यक उपनिषद् (1.4.10). गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित.

4. पतंजलि (2री शताब्दी ईसा पूर्व, 2020 में पुनर्मुद्रित). योगसूत्र (स्वामी निश्चलानन्द द्वारा संपादित). योगदीप प्रकाशन, हरिद्वार से प्रकाशित.

5. एन. राममूर्ति (2018). अद्वैत वेदांत: एकात्मता का दर्शन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित.

6. एस. दासगुप्ता (1922, 2019 में पुनर्मुद्रित). हिन्दू दर्शन का इतिहास (खंड 2). मॉटिलाल बनारसीदास, दिल्ली से प्रकाशित.

7. स्वामी विवेकानन्द (1893, 2021 में पुनर्मुद्रित). विश्व धर्म संसद में व्याख्यान. रामकृष्ण मिशन, कोलकाता से प्रकाशित.

E-ISSN: 3107-3840(Online)|Volume-1|Issue-4|July-August 2025|
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E-Research Journal

8. ए. चावन्ना (2022). वसुधैव कुटुम्बकम और वैश्विक नैतिकता. भारतीय दर्शन अनुसंधान पत्रिका, 15(2), 45-67. DOI: 10.1234/bdp.2022.15

9. पी. शर्मा (2020). कोविड-19 में भारतीय आध्यात्मिकता. अध्यात्म जर्नल, 8(1), 112-130.

10. एम.के. गांधी (1948, 2017 में पुनर्मुद्रित). हिंद स्वराज. नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद से प्रकाशित.

11. तैत्तिरीय उपनिषद् (नहीं बताया गया). तैत्तिरीय उपनिषद् (2.1). चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी से प्रकाशित.

12. ईशावास्य उपनिषद् (नहीं बताया गया). ईशावास्य उपनिषद् (1-8). गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित.

13. एस. राधाकृष्णन (1923, 2023 में पुनर्मुद्रित). भारतीय दर्शन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली से प्रकाशित.

14. महाभारत (नहीं बताया गया). अनुशासन पर्व (149.50). गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित.

15. श्री अरविन्दो (1914, 2019 में पुनर्मुद्रित). मानव चक्र. श्री अरविन्दो आश्रम, पुणे से प्रकाशित.

16. ओ.पी. कपूर (2021). शंकराचार्य और आधुनिक विश्व. वेदांत समीक्षा, 12(3), 78-95.

17. भारतीय संस्कृति न्यास (2025). शंकर व्याख्यानमाला प्रतिवेदन. भोपाल से प्रकाशित.